बाल्यावस्था एवं उनका विकास

(Childhood and Growing up)

कोर्स न0 : 01 सैद्धान्तिक : 80 अंक

कोर्स क्रेडिट :04 प्रायोगिक : 20 अंक

इस पाठ्यक्रम विवरण पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- बाल्यावस्था और किशोरावस्था के विचार की समझ विकसित करना ।
- विशेष रूप से भारत के संदर्भ के संबन्ध में मानव विकास को आकार देने में सामाजिक संस्कृति संपर्क के प्रभाव के बारे में समझ विकसित करना ।
- मानव विकास और विकासात्मक कार्यों के आयामों व चरणों की समझ विकसित करना ।
- शिक्षार्थियों के बीच संज्ञानात्मक क्षमता की सीमा को समझना ।
- अर्थ बनाने में शिक्षार्थी मतभेद और संदर्भ की महत्त्वपूर्ण भूमिका की सराहना करते हुए विद्यालय और शिक्षकों के लिए निहितार्थ को बाहर निकालना।
- समाजीकरण और एक बच्चे की पहचान के निर्माण में अपनी भूमिका को समझना ।
- अस्मिता निर्माण और उसके निर्धारकों को समझना ।

इकाई-1 (बाल्यावस्था की समझ)

- बाल्यावस्था की समझ:- विकासवादी परिप्रेक्ष्य में (स्वरूप)
- बाल्यावस्था का विस्तार:- सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक
- बाल्यावस्था के दौरान सहायक कारक :- परिवार, पड़ोस, समुदाय और विद्यालय
- बच्चे और उनका बाल्यावस्था-बिहार के वास्तविक संदर्भ में।
- बाल्यावस्था पूर्व शिक्षा का सामान्य उद्देश्य जो राष्ट्रीय लक्ष्य से संबंधित हो।
- सुखी बाल्यावस्था का अभिप्राय - वृहद संभाषण तथा शैक्षिक अनुप्रयोग
- वैयक्तिक विकास का विस्तार-शारीरिक, संज्ञानात्मक, भाषा सामाजिक और नैतिक इनके बीच का अंतरसंबंध और शैक्षिक निहितार्थ (पियाजे, इरिक्सन, कोहलवर्ग के विशेष सन्दर्भ में)

इकाई-2 (किशोरावस्था की समझ)

- किशोरावस्था :- अनुमान, रूढ़िवादी मान्यताएँ सम्पूर्ण रूप से समझ की आवश्यकता।
- प्रमुख मुद्दे :- विकास और परिपक्वता, प्रकृति और पालन-पोषण नियमितता औरअनियमितता।
- शिक्षार्थी के रूप में किशोरावस्था:- शैशवावस्था से किशोरावस्था तक विकास की विभिन्न अवस्थाओं से होते हुए उनके विकास पर प्रकाश डालते हुए, विकास की अवस्थाओं की चर्चा करना।

- किशोरावस्था को प्रभावित करने वाले कारक :-सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक
- किशोरावस्था :- गतिविधियाँ, आकांक्षाएँ, द्वन्द्व एवं चुनौतियाँ
- बिहार में किशोरावस्था के प्रासंगिक सत्य।
- किशोरावस्था में आचरण:- शिक्षक परिवार सम्प्रदाय की भूमिका पर वक्तव्य या 'संभाषण'

इकाई-3 (सामाजिक और शिक्षार्थी के संदर्भ की समझ)

- समाजीकरण की समझ
- घर के संदर्भ में समाजीकरण :- परिवार एक सामाजिक संस्था के रूप में परवरिश का तरीका और उनके प्रभाव, माता-पिता के गुण और मूल्यों का स्थानान्तरण ।
- समुदाय के संदर्भ में समाजीकरण : पड़ोसी, विस्तृत परिवार, धार्मिक समूह और उनके समाजीकरण कार्य
- विद्यालय के संदर्भ में समाजीकरण: स्कूल में प्रवेश के पहले का प्रभाव,विद्यालय एक सामाजिक संस्था के रूप में और बिहार में इसकी धारणा, विद्यालयी संदर्भ में मूल्य निर्माण।
- अस्मिता निर्माण की प्रक्रिया में विद्यालय: प्राथमिकता देना, ग्रहण करना, सम्मिलित होना
- परिवार में, विद्यालयों में अन्य औपचारिक और अनौपचारिक संगठनों में लिंग, पहचान और समाजीकरण का अभ्यास की प्रक्रियाएँ, बालिकाओं के लिए विद्यालय
- समाज में प्रतिरोध एवं असमानताएँ: अधिगम के मुद्दे, संसोधन एवं अवधारणा

इकाई-4 (शिक्षार्थियों में समझ की विभिन्नताएँ)

- सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ पर आधारित शिक्षार्थियों में विभिन्नताएँ: शिक्षार्थियों के गृह भाषा का प्रभाव और निर्देश की भाषा, शिक्षार्थियों के प्रभाव का सांस्कृतिक पूँजी की विभिन्नताएँ।
- वैयक्तिक अधिगमकर्त्ताओं के बीच विभिन्नताएँ: बहु बौद्धिक क्षमता, अधिगम की शैली (तरीका), आत्म-अवधारणा, आत्म-प्रवाह (स्व-आदर) अभिरूचि, मनोवृत्ती, कौशल और क्षमताएँ, रूचि, मूल्य, व्यक्तित्व और नियंत्रण की बिन्दु।
- शिक्षार्थियों की असमर्थता की समझ: मंद बुद्धि, पठन संबंधी समस्या से ग्रस्त शिक्षार्थी।
- वैयक्तिक विभिन्नता प्रदान करने की विधियों में अंतर: जाँच, अवलोकन (प्रेक्षण) योग्यता मापन, आत्म प्रतिवेदन (Self-reports)
- खान-पान में वैयक्तिक विभिन्नता की :- संयोजक पाठ्यक्रम, वर्गीकरण, व्यक्तिगत अनुदेशन, निर्देशन और परामर्श, सहायक पाठ्यक्रम, प्रभावशाली कार्यप्रणाली एवं समाज या सभा (संघ)।

इकाई-5 (शिक्षार्थी की अस्मिता का विकास)

- पहचान रचना की समझ:-विविध सामाजिक एवं संस्थानों से सन्दर्भित व्यक्ति के रचना में बहु पहचान (बहु अस्तित्व) का उभार अन्तर समांजस्य की आवश्यकता, विरोधाभास की पहचानों की व्यवस्थापन (प्रबन्ध करना)
- वैयक्तिक एवं सामूहिक रूप के रचना में पहचान का निर्धारण: सामाजिक श्रेणियाँ जैसे-जाति, वर्ग, लिंग, धर्म, भाषा और उम्र।
- अध्यापक और विद्यार्थियों के रचना में स्कूल एक पहचान के रूप में:- विद्यालय, संस्कृति और चरित्र, शिक्षण-अधिगम, अभ्यास, कक्षा-कक्ष में शिक्षक का संवाद और अभ्यास, मूल्यांकन अभ्यास, विद्यालय में मूल्य पद्धति और छुपा पाठ्यक्रम।
- पहचान रचना में सहपाठी वर्ग, मीडिया, प्रौद्योगिकी (तकनीकी) और सार्वभौमिकता का प्रभाव।

<u>अभ्यासार्थ कार्य :</u>

(1) विकसित समझ पर अनुदेश का प्रकाश एवं कक्षा का आलोचनात्मक विश्लेषण।

(2) अपर्वंचित (सुविधाहीन) मंदित, LD चाइल्ड प्रतिभाशाली बालक के व्यवहार का एक अधिगमकर्त्ता के रूप में जीवन इतिहास का अध्ययन करना।

(3) बच्चों के उनके स्वभाविक या प्राकृतिक समायोजन का अवलोकन करना।

(4) कम से कम पाँच विद्यालयों के बच्चों के बौद्धिक क्षमता एवं उसके उपलब्धि और उसके पश्चय तथ्यों से प्राप्त शक्ति का अध्ययन करना ।

समकालीन भारत और शिक्षा

कोर्स न0 : 02 | सैद्धान्तिक : 80 अंक

कोर्स क्रेडिट :04 | प्रायोगिक : 20 अंक

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- शिक्षा में अवधारणा और लक्ष्यों की समझ।
- समकालीन भारतीय शिक्षा की वास्तविकता की समस्याएँ एवं मुद्दे से संबन्धित दृष्टिकोण का विकास करना।
- संवैधानिक मूल्यों और शिक्षा पर उनके प्रभाव की समझ ।
- दर्शन की अवधारणा, दर्शन और शिक्षा के बीच के संबंध और शिक्षा के निहितार्थ की समझ।
- भारतीय और पाश्चात्य विचारकों की शैक्षिक दृष्टि की समझ ।
- दर्शन के स्कूलों और शिक्षा पर उनके प्रभाव।
- माध्यमिक शिक्षा और इसे साकार करने के लिए संवैधानिक प्रावधानों के सर्वभौमिकरण के महत्व की समझ।
- मुद्दों और माध्यमिक शिक्षा के सर्वभौमिकरण से संबंधित चिंताओं की जाँच की समझ।
- UEE के लिए प्राप्त रणनीति/कार्यनीतियों का विश्लेषण और उनके कार्यान्वयन के परिणामों की समझ।
- शिक्षा में न्यायनीति और गुणवत्ता की जरूरत तथा महत्व की पहचान और संवैधानिक प्रावधानों की समझ।
- विद्यालय में असमानता के लिए उसके विभिन्न कारणों की पहचान और समझ।
- शिक्षा के अधिकार के महत्व और इसे पूरा करने के लिए किए गए प्रावधानों की पहचान।

इकाई-1 (शिक्षा की अवधारणा तथा लक्ष्य की समझ)

- अवधारणा: शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषाएँ, शिक्षा की प्रक्रिया-विद्यालयी, निर्देशन, प्रशिक्षण और भावना, शिक्षा का माध्यम-औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक।
- लक्ष्य :- लक्ष्य के कार्य एवं अर्थ, शिक्षा के उद्देश्यों का वर्गीकरण, शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारण करना, व्यक्तिगत संबंध में शिक्षा के उद्देश्य, समाज तथा राष्ट्र के संबंध में शिक्षा के उद्देश्य, सामाजिक और व्यैक्तिक उद्देश्यों के बीच दार्शनिक विरोधाभास और उनका संश्लेषण।

इकाई-2 (भारतीय शिक्षा का मानकीय दृष्टि (झलक)

- भारतीय शिक्षा के मानकी व्यवस्था -एक ऐतिहासिक जानकारी।
- शिक्षा के संवैधानिक प्रावधान जो भारतीय आदर्शों को प्रतिबिम्बित करते हैं प्रजातंत्र, समानता, स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षवाद और सामाजिक न्याय।

- एक उभरते हुए देश, प्रदेश के रूप में भारत :- मुख्य विशेषताएँ :- दृष्टि, प्रकृति और प्रजातांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष राजनीति, संघीय संरचना :- शैक्षणिक पद्धतियों के लिए उपयोगिता।
- मानकी दृष्टि से निकाला गया शिक्षा के लक्ष्य और प्रस्ताव।
- राष्ट्रीय विकास के लिए शिक्षा :- शिक्षा आयोग (1964 -66)।
- उभरते हुए विचारधारा के बीच अन्तरापृष्ठ :- (i) राजनीतिक प्रक्रिया और शिक्षा, (ii) आर्थिक विकास और शिक्षा, (iii)सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन और शिक्षा।

इकाई-3 (शिक्षा की दार्शनिक दृष्टि और प्रणालियाँ)

- शिक्षा और दर्शन: शिक्षा के अर्थ एवं परिभाषाएँ, दर्शन की शाखाएँ और उनका शैक्षिक समस्याओं और मुद्दों से संबंध ।
- दार्शनिक प्रणालियाँ-दर्शन का सम्प्रत्यय-आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद मार्क्सवाद और मानवतावाद, विशेष रूप से वास्तविक ज्ञान, मूल्य एवं उनके शैक्षिक उपयोगिताएँ, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधिया अनुशासन के संदर्भ में।

इकाई-4 (शिक्षा की दार्शनिक झलक : शैक्षणिक विचारक)

शिक्षा दर्शन एवं व्यवहार के महत्वपूर्ण गुणधर्म का संक्षिप्त विवरण निम्न विचारकों के अनुसार-

1) भारतीय विचार- रविन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द, अरबिंदों घोष, डॉ. कृष्णमूर्ति, गिजु भाई बधेका।

2) पाश्चात्य विचारक-प्लेटो, रूसो, डीवी, फ्रॉबेल और मारिया मॉन्टेसरी।

इकाई-5 (समकालीन भारतीय संप्रदाय: संबंध और मुद्दे)

- विद्यालयी शिक्षा का सार्वभौमिकरण-शिक्षा का अधिकार और सुगमता, मुद्दे -सार्वजनिक पंजीयन, सार्वजनिक अवरोधन, सार्वजनिक सफलता ।
- गुणवत्ता एवं समानता के मुद्दे–उपरोक्त को विशेष रूप से शारीरिक आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक सुलभता के संदर्भ में चर्चा करना, विशेष रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों, छात्राएं और सक्षम बच्चों की भिन्नता की चर्चा करना।
- शैक्षणिक अवसर की समानता; समानता और संवैधानिक प्रावधानों का अर्थ, असमानता के रूप और उसके प्रकृति को प्रबल करना तथा लघु समूह और सम्बन्धित मुद्दों को प्रभावशाली बनाना।
- साम्प्रदायिक असमानता विद्यालयों में; निजी विद्यालय, शहरी और ग्रामीण विद्यालय, एकल शिक्षक विद्यालय और बहुत प्रकार के रूपों में असमानताएँ, विद्यालय पद्धतियों में और दलविहिनों के नेतृत्व की प्रक्रिया।

- संप्रदाय में विभिन्न गुणवत्ता; विद्यालयों की गुणवत्ता का ह्रास और उन्नयन।
- सामान्य विद्यालयों की पद्धति की विचारधारा।
- शिक्षा विधेयक और उसके प्रावधानों के अधिकार।

अभ्यासार्थ कार्य :

(1) शैक्षिक विचारकों का अध्ययन करना और किसी एक विचारकों के योगदान का प्रस्तुतीकरण करना। (सामूहिक परिचर्चा के द्वारा सामूहिक कार्य)।

(2) एक विचारक के मूलभूत कार्यों पर योजना बनाना ।

(3) किसी दार्शनिक मुद्दे और प्रतिवेदन पर संगोष्ठि का प्रस्तुतीकरण करना।

(4) कुछ अधिगमकर्ता के दार्शनिक विचार का संक्षिप्त अध्ययन।

(5) माध्यमिक शिक्षा के सर्वभौमिकरण (USE) की प्रतिवेदनों और नीतियों का प्रस्तुतीकरण करना ।

(6) विभिन्न शैक्षिक संदर्भो का सर्वेक्षण करवाना (जैसे विभिन्न प्रकार के विद्यालय) जिसमें विभिन्न प्रकार के असमानता की पहचान ।

(7) किसी विद्यालय के संदर्भ में उसके लक्ष्य, उद्देश्य, मूल्य और पाठ्यक्रम का अध्ययन हेतु सर्वेक्षण करना । (गैर-सरकारी विद्यालय, सरकारी विद्यालय, बुनियादी विद्यालय, कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय, बहुभाषायी, धार्मिक और अल्प संख्यक विद्यालय द्वारा संचालित)

(8) कुछ पुस्तकों की सूची पर टिप्पणी करना।

अधिगम और शिक्षण

कोर्स न0 : 03 — सैद्धान्तिक : 80 अंक

कोर्स क्रेडिट :04 — प्रायोगिक : 20 अंक

इस पाठ्यक्रम विवरण पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- संकल्पना और सीखने की प्रकृति को समझने में ।
- समझने और सीखने का अलग-अलग दृष्टिकोण की सराहना :- व्यवहारिक, सामाजिक, संज्ञात्मक और मानवतावादी।
- अधिगम की कार्यनीति और उसके विभिन्न प्रकार को समझना ।
- अधिगम की विभिन्न अवस्थाओं को समझना और कौशलो को प्राप्त कर उन्हें बताना ।
- एक शिक्षक के रूप में विभिन्न विषयों की पाठ्य सामग्री की पहचान कराना ।
- एक विषय के शिक्षण में अनुदेशात्मक उद्देश्यों को चिन्हित करना ।
- विभिन्न कौशलों के बारे में उनकी समझ और प्रभावी शिक्षण में उनकी भूमिका का प्रदर्शन करना।
- शिक्षण कौशल को प्रभावी ढ़ंग से उपयोग करना।
- शिक्षार्थियों की सक्रिय भागीदारी के साथ सीखने की प्रक्रिया का आयोजन करना- व्यक्तिगत या सामूहिक।

इकाई-1 (अधिगम: प्रकृति प्रकार और कौशल)

- अवधारणा और अधिगम की प्रकृति :- अधिगम अवधारणा, अधिगम कौशल, मौखिक अधिगम, सामाजिक अधिगम, मुख्य अधिगम, समस्या समाधान।
- अधिगम सिद्धांतों के प्रासांगिक आधारभूत संकल्पनाएं और विश्लेषण व्यवहारिक, सामाजिक, संज्ञानात्मक और मानवीय अधिगम सिद्धांत।
- ज्ञान के संरचना की प्रक्रिया के रूप में अधिगम, अधिगम के संरचनात्मक उपागम।
- विद्यालयी कुशलता हेतु अधिगम का संबंध और अधिगमकर्ता की क्षमता।

इकाई-2 (अधिगम प्रबंध और अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक)

- अभिप्रेरणा की अवधारणा:- प्रकार, अभिप्रेरणा की वृद्धि करने वाली प्रविधियाँ।
- स्वास्थ्य, नींद, काम करने में कठिनाइयाँ, विषय वस्तु एवं अध्ययन की आदते अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक के रूप में।
- अधिगम की विधि पर प्रभाव: भाग या संपूर्ण अधिगम, अल्पज्ञ और अधिक गहराई से अध्ययन: वर्तमान अधिगम पर पूर्व अधिगम का प्रभाव: अधिगम का स्थानान्तरण के लिए रणनीतियाँ।

- कक्षा कक्ष में अधिगम का विस्मरण-अर्थ और इसके कारण; अधिगम स्मृति को बढ़ाने हेतु रणनीतियाँ।
- अधिगम के लिए अधिगम कौशल का अर्थ; स्व-अध्ययन को बढ़ाने हेतु विधियाँ।

इकाई-3 (शिक्षक और शिक्षण की समझ)

- शिक्षण क्या है? शिक्षण एक योजनाबद्ध क्रियाविधि-योजना के तत्व।
- शिक्षण और शिक्षण की योजना पर पड़ने वाले प्रभाव की कल्पना।
- शिक्षण में प्रवीणता: अर्थ और जागरूकता का स्थान, कौशल, योग्यता और दृढ़ निश्चय।
- प्रभावी शिक्षण की कल्पना; व्यवहारिकतावादी, मानवतावादी और रचनात्मकता वादी दृष्टिकोण।
- शिक्षकों की भूमिका एवं कार्य का विश्लेषण; कौशल और योग्यता पूर्व क्रियाशील अवस्था में कल्पना, परिणाम तैयार तथा संगठन पर निर्णय, वर्तमान अवस्था में व्यवस्थित अधिगम की सुविधा, पश्च क्रियाशील अवस्था-अधिगम परिणाम का आँकलन, पूर्व क्रियाशील वर्तमान क्रियाशील तथा पश्च क्रियाशील अवस्था पर प्रकाश डालें।
- प्रभावी शिक्षकों से संबंधित विशेषताएँ, शिक्षकों की व्यवसायिक पहचान-इसे प्रबंध करने का तरीका क्या है?

इकाई-IV (शिक्षण के लिए योजना)

- कल्पना; अधिगमकर्त्ता और कल्पना; अधिगमकर्ता और विशिष्ट अधिगम उत्साह, विषय सामग्री, विषय सूची और उनका अंत: संयोजन, अधिगम स्रोत, उपागम/उपाय।
- परिणाम पर निर्णय देना: सामान्य निर्देशित लक्ष्य की स्थापना: उद्देश्यों का विशेष विवरण और अधिगम के लिए मानक, विभिन्न क्रियाशीलता/काम के लिये अनुदेशित समय का निर्धारण; अधिगम में बदलते अनुदेशन समय।
- अनुदेशन उपागम एवं उपाय पर निर्णय; विवरण या अन्वेषन व्यक्तिगत या छोटे समूह या संपूर्ण वर्ग: अधिगम के कार्य में व्यस्त रखने के लिए कौशल की आवश्यकता, निर्णय युक्ति के संदर्भ में ।
- अनुदेशन के लिए तैयारी: उपलब्ध अधिगम स्रोतों और विकसित आवश्यक अधिगम स्रोतों की पहचान एवं चुनाव।
- योजना का निर्माण; इकाई योजना और पाठ योजना।

इकाई-V (कौशल एवं शिक्षण की युक्तियाँ)

- पाठ का परिचय: आवश्यकता और विभिन्न संभावनायें
- अधिगमकर्त्ता की अभिप्रेरणा और उनकी वैद्यता पर ध्यान देना-उद्दीपक परिवर्तन का महत्व एवं पुनर्बलन का कौशल।
- प्रश्नोत्तर, उदाहरण सहित व्याख्या; वर्णन शिक्षक योग्यता, कक्षा कक्ष में छात्र अधिगम को प्रभावित करने के रूप में।
- शिक्षण की युक्ति (a) विवरण उपाय शिक्षण उपागम के रूप में प्रस्तुतीकरण, वार्तालाप, प्रदर्शन, प्रगति, सुझाव, नमूना।

  (b) शिक्षण चिन्तन कौशल और ज्ञान की संरचना के उपागम के रूप में पूछताछ एक उपाय-संकल्पना। संकल्पना निर्माण, आगमनात्मक चिन्तन, समस्या आधारित अधिगम/परियोजना आधारित अधगिम
- वैयक्ति निर्देशन का निष्कर्ष: संगणक व्यवस्थित अनुदेशन, कार्यक्रम अनुदेशन और अधिगम क्रियाशीलता संपुष्टि।
- छोटे समूह और संपूर्ण वर्ग के अनुदेंशन पर चर्चा; सहयोगात्मक और सहयोग के निष्कर्ष पर अधिगम, मस्तष्कि उद्वेलन, भूमिका निर्वहन और नाटकीकरण; समूह चर्चा, अनुकरण और खेल।

अभ्यासार्थ कार्य :

(1) विषय वस्तु के श्रेणियों की अस्मिता की पहचान करो जिसमें विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम का तुलनत्मक अध्ययन हो।

(2) क्षेत्र और स्तर के आधार पर पाठ के अनुदेशनात्मक उद्देश्यों का लेखन ।

(3) प्रस्तावना, प्रश्न, उद्दीपन परिवर्तन, उदाहरण सहित व्याख्या पर अभ्यास और अधिगम क्रियाविधि का आयोजन।

(4) अधिगम क्रियाविधि का निर्माण और कक्षा कक्ष में उसका संगठन या उपयोग ।

(5) रणनीतियों के प्रकार जो अधिगम को आयाजन करने में शिक्षकों के द्वारा कक्षा कक्ष में प्रयोग किया जाता है इसका विश्लेषण ।

भाषागत या भाषायी पाठ्यक्रम

कोर्स न0 : 04 — सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट :02 — प्रायोगिक : 10 अंक

इस पाठ्यक्रम विवरण पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- भाषा की वैचारिक समझ।
- भाषा के विभिन्न भूमिकाओं की समझ।
- साहित्य और भाषा के बीच के संबंध की समझ।
- भाषा के विभिन्न स्वर (विस्तार) की समझ और उपयोग ।
- विद्यार्थी की अपनी भाषा का समझ -प्रथम में रखना एवं पढ़ाने में दूसरी भाषा का मान।
- कक्षा, विद्यालय में विभिन्न बोली का उपयोग एवं घरेलू शब्द का इस्तेमाल ।
- कक्षा में भाषा विविधता के लिए सम्मन के साथ संवेदनशीलता का विकास करना ।
- कक्षा में पढ़ाने की प्रकृति की समझ।
- संवैधानिक प्रावधानों और आयोगों की सिफारिशों और भाषा की शिक्षा की नीतियों का विश्लेषण।

इकाई-01 (अधिगम कर्ता और उनकी भाषा)

- भाषा का अर्थ, विभिन्न रूप, तंत्र एवं गुणधर्म।
- विद्यालय प्रवेश के पहले अधिगमकर्ता की भाषा पूँजी।
- स्कीनर, कोमस्की, पियाजे और वायगोत्सकी के विशेष प्रसंग में छात्र भाषा कैसे सीखता है?
- आत्मसात् भाषा और सीखने की भाषा में अन्तर।
- सामाजिक एवं संस्कृतिः भाषा का सन्दर्भ, भाषा एवं लिंग, भाषा एवं पहचान, भाषा एवं शक्ति, भाषा एवं कक्षा (समाज)।
- भाषा का राजनीति सन्दर्भः भारत एवं बिहार की बहुभाषायी दृष्टिकोण, भारत में भाषा से सम्बन्धित संवैधानिक प्रावधान।

इकाई-02 (विद्यालय पाठ्यक्रम में भाषा)

- गृह भाषा एवं विद्यालयी भाषा :- समझ का माध्यम (छात्र की अपनी भाषा),
- भाषा को सीखने में केन्द्रीत्व
- भाषायी पाठ्यक्रमः- पाठ्यक्रम में भाषा की भूमिका एवं महत्व।

- भाषा और उसके ज्ञान की संरचना, भाषाओं के सीखने के उद्देश्य और उसकी समझ, कल्पना, रचनात्मकता, संवेदनशीलता, कौशल विकास।
- विद्यालयी विषय के रूप में भाषा सीखने के साधन के रूप में, भाषा तथा भाषा संचारण में अन्तर।
- अनुदेशन के माध्यम का आलोचनात्मक सिंहावलोकन, विभिन्न विद्यालयी विषयों की सूची।
- बहुभाषायी कक्षाएँ, बहुभाषायी जागरूकता और भाषा शिक्षण।

इकाई-03 (संवैधानिक प्रावधान और भाषा शिक्षा की नीतियाँ)

- भारत में भाषा की स्थिति: अनुसूची 343-351 तथा 350 A
- कोठारी आयोग की संस्तुति (1964-66), शिक्षा को राष्ट्रीय नीति-1986, कार्यक्रम का कार्य (POA)1992 के कार्यक्रम का कार्य

अभ्यासार्थ कार्य :-

1. कोठरी आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986, POA- 1992 में दी गयी भाषानीतियों एवं भारतीय संविधान में भाषा के स्तर पर आधारित प्रतिवेदन तैयार करना।
2. आस-पास के कम से कम पाँच विद्यालयों का साक्षात्कार कर त्रिभाषा सूत्र की उपयोगिता के आधार पर एक प्रतिवेदन तैयार करना।
3. कक्षा VI → VII के विज्ञान, सामाजिक विज्ञान तथा गणित के पुस्तकों से कुछ अनुच्छेद लेकर निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर विश्लेषण करना:-
   (a) भाषा के विभिन्न सूचियों से कैसे परिचय कराया गया है?
   (b) क्या भाषा के चर्चित प्रकरण को स्पष्ट तथा संप्रेषित किया गया है?
   (c) क्या भाषा, शिक्षार्थी के प्रति मित्रवत् है?
   (d) क्या भाषा तकनीकी पूर्ण है?
   (e) क्या यह भाषा सीखने में सहयोग देता है?

अनुशासन एवं विषयों की समझ

कोर्स न0 : 05 — सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट :02 — प्रायोगिक : 10 अंक

इस पाठ्यक्रम विवरण पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- विषयों/अनुशासन की बुनियादी परिसर की समझ ।
- मानव ज्ञान के वर्गीकरण की आवश्यकता की समझ ।
- ज्ञान के प्रभावी समझ को जानने के लिए बुनियादी दक्षता की आवश्यकता ।
- विषयों के ज्ञान की वृद्धि कैसे हो इसकी जानकारी प्राप्त करना।
- विषय/शिक्षण की उन्नति के लिए अनुसंधान का महत्व।
- शिक्षा के क्षेत्र में आन्तरिक अनुशासन की अवधारणा की समझ ।

इकाई-01 अनुशासन और विषय की आधारभूत समझ

- अनुशासन क्या है? अनुशासन की अवधारण के इतिहास को स्पष्ट करें।
- शैक्षिक अनुशासन क्या है? अनुशासन और विषय के सन्दर्भ में मानवीय ज्ञान के वर्गीकरण का दृष्टिकोण की जरूरतों की विवेचना करें ।

1. दार्शनिक सन्दर्भ: एकता और अनेकता ।
2. मानव ज्ञान के दृष्टिकोण से सांस्कृति और जनजाति,
3 सामाजिक सन्दर्भ : व्यवसायीकरण और कार्य का विभाजन
4. ऐतिहासिक सन्दर्भ : विकास और विभाजन ।
5. प्रबन्धकीय सन्दर्भ : बाजार और संगठन।
6. अनुशासन और विषय के संदर्भ में : शिक्षण एवं अधिगम।
7. अनुशासन और विषयों के बीच अंतर : विषयों की प्रकृति और क्षेत्र ।
8. विषयों की रुचि एवं दुर्बलता।
9. विषयों का दर्शन और बुनियादी परिसर

- विषय का दर्शन और उसका आधारभूत क्षेत्र राष्ट्रीय संदर्भ में, विधार्थी के विकास हेतु उसके विषय/अनुशासनों के उद्देश्य।

इकाई-02 (योग्यता एवं अग्रसर होने के लिए अनुशासन/विषय)

- विषयों पर महारत
- विषयों के साथ संवाद
- विषय विशिष्ट शब्दों और उनके उपयोग
- विषय के विशेषभेद एवं उसका प्रयोग विषय में योजना/क्रियाशीलता
- विषय अनुशासन में अनुसंधान
- विषय में आकड़ों को एकत्र करने के विधियाँ
- निष्कर्ष निकालना, समान्यीकरण और सिद्धान्त
- विकास, पहचान/सम्बन्ध की तैयारी,
- टिप्पणी और पुस्तकों की सूची

इकाई-03 (अन्तरानुशासनात्मक अधिगम और उससे सम्बन्धित मुद्दें)

- अन्तरानुशासनात्मक अधिगम क्या है?
- अन्तरानुशासनात्मक अधिगम-एकवचनात्मक प्रक्रिया, अन्तरानुशासनात्मक विषय क्या है?
- अन्तरानुशासनात्मक विषयों के सामान्य उद्देश्य क्या है? क्या अन्तरानुशासनात्मक विषयों में अनुशासनात्मक गंभीरता आवश्यक है?
- अन्तरानुशासनात्मक विषयों की योजना एवं संगठन का निर्माण कैसे करेंगे ?
- अन्तरानुशासनात्मक अधिगम का आकलन कैसे कर सकते हैं।
- अन्तरानुशासनात्मक विषयों की गुणवत्ता का आश्वासन के लिए कौन सी कसौटियाँ प्रयोग की जा सकती है?

लिंग, विद्यालय और समाज

कोर्स न0 : 06 सैद्धान्तिक : 40 अंक
कोर्स क्रेडिट :02 प्रायोगिक : 10 अंक

इस पाठ्यक्रम विवरण पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- आधारभूत समझ का विकास और अच्छी जानकारी के साथ लिंग, लिंग पक्षपात, घिसा-पिटा, सशक्तिकरण, लिंग समानता, न्यायसम्य और समानता, पितृसत्ता और स्त्रियों के अधिकारों का समर्थन करना।
- लैंगिक अध्ययन करने के लिए महिलाओं के अध्ययन से क्रमिक बदलाव को समझने और ऐतिहासिक और समकालीन अवधि में लिंग और शिक्षा के संबन्ध में कुछ महत्वपूर्ण स्थलों की जानकारी ।
- विद्यालय में लिंग मुद्दे, पाठ्यक्रम, मूलपाठ, सामग्री के आरपार अनुशासन शैक्षणिक तरिकों और इसके प्रतिच्छेदन के साथ वर्ग, जाति, धर्म, और क्षेत्र के बारे में अध्ययन ।

इकाई-1 (लिंग निर्गमः मूल संदर्भ संकल्पना)

- लिंग, लैंगिकता, पितृसत्ता, पुरूषत्व और नारीवाद लिंग पक्षपात, धारणा और समर्थ करना।
- निष्पक्षता और समानता के सम्बन्ध में -जाति, वर्ग, धर्म, नैतिकता, अशक्तता एवं क्षेत्र।
- नारी अध्ययन से सामान्य अध्ययन का स्थानान्तरण का प्रतिमान।
- ऐतिहासिक भूमिका: 19वीं एवं 20वी शताब्दी में स्त्री शिक्षा में सुधार सम्बन्धी पद चिन्ह।
- समकालीन अवधिः सुझाव के विभिन्न नीतियाँ-प्रोग्राम, योजना आयोगों और समितियाँ।

इकाई-2 (लिंग, शक्ति और शिक्षा)

- लिंग और शिक्षा के सिद्धान्तः भारतीय अनुप्रयोग के सन्दर्भ में ।
- समाजीकरण सिद्धान्त, लिंग अन्तर संरचनात्मक सिद्धान्त और विनाशकारी सिद्धान्त ।
- लिंग तादात्मय और समाजीकरण व्यवहार में -परिवार, विद्यालय अन्य औपचारिक एवं अनौपचारिक संगठन।
- लड़कियों की विद्यालय असमानता और प्रतिरोधकता (आगमन का निर्णय, अवरोधन और बहिष्करण)

इकाई-3 (पाठ्यक्रम में लिंग निर्गम)

- लिंग, संस्कार और शिक्षण:- विखण्डन का वर्ग, जाति, धर्म एवं क्षेत्र से पाठ्यक्रम और लिंग प्रश्न ।
- स्वतंत्रता के समय से, लिंग पाठ्यक्रम में संरचनात्मक ढाँचा विशलेषण लिंग और छिपी पाठ्यक्रम।

- मूलपाठ में लिंग और सन्दर्भ (आन्तणिवक मूलपाठ के साथ-अनुशासन, वर्ग-प्रक्रिया, शिक्षा-शास्त्र सहित)
- शिक्षण बदलने में अभिकर्त्ता ।
- जीवन कौशल और लैंगिकता ।
- **अभ्यासार्थ कार्य-**
- लिंग सम्मत एवं धारणा के दृष्टि कोण से पाठ्य सामग्रियों का विश्लेषण।
- विषम जातीय विद्यालयों में, लोक एवं सहायता प्राप्त और प्रबन्धकीय जो विविध धार्मिक नामकरणों से चलते हैं उनमें लड़के एवं लड़कियों के सहभागिता के सूचकों को तैयार करना।
- पाठ्यक्रम में लिंग के चिन्तन से सम्बन्धित यन्त्रों का विश्लेषण कर तैयार कराना।
- विभिन्न क्षेत्रों पर प्रभाव डालनेवाले नारी प्रतिमानों पर स्वच्छन्द रूप से परियोजना तैयार करना।
- परियोजना के द्वारा परिवार संस्थान का विश्लेषण करना।

  (i) विवाह; पुर्नर्जन्म,

  (ii) प्रसव एवं संसाधन का लैंगिक विभाजन ।
- आयोग के स्वीकृतियों एवं नीतियों का संवेदनशील परियोजना तैयार करना सामर्थ्य बनाना, और लड़कियों एवं महिलाओं को अधिकार देना महिला समाख्या प्रोग्राम महिला के कार्यक्षेत्र हजमूलकि आधार पर।

ई.पी.सी.-01 पठन पाठन पर प्रकाश

कोर्स न0 : ई.पी.सी.-01 सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट :02 प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

भाषा विचारों को समझने, मनन करने, सोचने, और किसी तथ्य को व्यक्त करने और वार्तालाप करने का एक व्यापक माध्यम है ।

निर्देश के रूप में सुविधा को बढ़ाना जिससे छात्र शिक्षकों की महत्वपूर्ण आवश्यकता की पुर्ति हो सके चाहे जिस विषय में वह शिक्षण कार्य कर रहे हों। यह पाठ्यक्रम साकार करता है भाषा को शिक्षण के रूप में पाठ्य आधारित गतिविधियों के संप्रेषण में जैसे उसे पढ़ने, उसे सोचने-समझने, उसे विचार करने एवं उसे लिखने में सहायता प्रदान करते हुए भाषा योग्यता के विभिन्न स्तरों के साथ छात्रध्यापक अपने शिक्षण विधि की शुरुआत कर सकते हैं इसलिए यह सम्मिलित कार्य इस पाठ्यक्रम को विभिन्न स्तरों पर अधिकतम करने वाला है। सम्भवत: छात्रध्यापक की एक विशेष रूचि उत्पन्न करने वाला यह पाठ्यक्रम है जिसमें वह पढ़ना और विभिन्न स्तरों पर उसका पाठ सार समझने की बुद्धि विकसित करेगा। यह भी इस पाठ्यक्रम से यह सीखेंगे कि विभिन्न संदर्भो में कैसे लिख जाए, उसे कैसे व्यवहारिक ढ़ंग से उपयोग किया जाए। व्यापक शब्दों में यह समझ सकते हैं कि यह पाठ्यक्रम भाषा की शुद्धता, उसकी समझ, एवं ज्ञान उसपर विचारना, उसका उपयोग समझाने वाला है, जो हमें आने वाले दिनों में एक उत्कृष्ट शिक्षक के रूप में स्थापित करने में सहायक होगा।

इकाई-1 (कथनात्मक एवं वर्णनात्मक संलग्नता का रिपोर्ट)

- समझने और आकार देने के लिए पढ़ना (व्यक्तिगत, सामूहिक पठन-पाठन और चर्चा करने के लिए/स्पष्टीकरन के लिए)
- पाठ्यक्रम को पुन: कहने/समझने की समझ - अपने शब्दों में/विभिन्न आयाम मे साथ (एक समूह में)
- बयान करना/वर्णन करना (एक छोटे समूह में)
- पात्रों, परिस्थितियों का वर्णन करना - एक छोटे समूह में वर्णन करना।
- पाठ्यक्रम पर आलेख तैयार करना जैसे दृश्य के छोटे भागों को, कहानी को संप्रेषित करना, परिस्थितियों को संवाद देना (व्यक्तिगत कार्य के रूप में)

इकाई-2 (सम्मिलित प्रचलित विषय पर आधारित-प्रतिपादिकीय लेखन)

चयनित पाठ्यपुस्तकें जिनमें-जीवनी लेखन या लेख अथवा प्रचलित अथवा, अप्रचलित, अकथनीय साहित्य लेखन, सारांश, विषय क्षेत्र से निकाला गया हो। जो छात्राध्यापक द्वारा सम्बन्धित सम्मिलित है। (जिसमें विभिन्न विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल साहित्य अथवा भाषा के अंश हो सकते हैं) इस इकाई के लिए अपने विषयों के अनुसार विभिन्न भागों में विभिन्न पाठों को पढ़ सकते हैं। ।

सुझावित क्रियाकलाप-

- निष्कर्ष, सूचना, विषयवस्तु का सार समझने के लिए पढ़ना (विभिन्न खण्डों में पढ़ना एवं एक नोट तैयार करना) एक पढ़ने की नीति तैयार करना जिससे अर्थ स्पष्ट हो सके।
- अवधारणाओं और विचारों को समझना एवं एक नोट तैयार करना जैसे फर्म फ्लो ढाँचा, वृक्षरेख, मन में नक्शा तैयार करना आदि विधियों का उपयोग करना (एक जोड़ा रूप में)
- पाठ/विषय के सार का वर्णन करना (एक व्यापक समूह में)।
- लिखने के प्रकार, विषय को दर्शाने के लिए एक विशेष शब्दों का उपयोग और विशेष परिप्रेक्ष्य या संदर्भों के उपयोग को समझना एवं उसको समझना (वाद-विवाद की शैली के साथ)।
- पाठ्य पुस्तकों का सारांश अथवा उनके लेखन का पुर्नावलोकन मतों और समीक्षा के साथ रिपोर्ट तैयार करना। (व्यक्तिगत कार्य)

इकाई-3 (शैक्षणिक लेखन में समाविष्ट)

यह विषय किसी एक लेखक के शैक्षणिक आलेख, कहानी, निबंध अथवा एक खास सार हो सकता है, जिसमें शिक्षा, विद्यालय, शिक्षण या अधिगम पर चर्चा किया गया हो और उसमें एक खास विषय के सामयिक विषय पर चर्चा अथवा कथन की चर्चा की गई हो, जो उपर के बातों में से एक हो। छात्राध्यापक इसक इकाई के लिए खंडों में विभाजित हो कर समझ सकते हैं।

सुझावित क्रियाकलाप

- निबंध के कथन और थीम को समझने के लिए पढ़ना। (व्यक्तिगत रूप में या युग्म में अध्ययन निर्देशित)
- तर्क की संरचना का विश्लेषण - मुख्य विचार को समझना, अनुच्छेद के विषय वाक्य को समझना, सहायक विचार और उदाहरण को समझना, उतार चढ़ाव के पदों को समझना (छोटे युग्मों में वाद विवाद निर्देशित)।
- विषय वस्तु, प्रतिक्रियाओं एवं विभिन्न विन्दु पर विचार करना (छोटे युग्म में वाद विवाद)
- प्रतिक्रियाओं को कागज पर लिखना (व्यक्तिगत या युग्म में)
- चयनित प्रश्नों, प्रश्नोत्तर, प्रश्नपत्रों का प्रस्तुतीकरण (वृहत समूह)

अभ्यासार्थ कार्य (कोई एक)

इनमें से एक पर समीक्षात्मक अनुशंसा करें :-

- डेनियल डीफो द्वारा रोबिन्सन क्रुज।
- जोबाथन स्वीप्ट द्वारा गुलिवर्स यात्रा ।
- अरूणधती राय द्वारा गोड ऑफ स्माल लिंग ।
- ए० पी० जे० अब्दुल कलाम द्वारा विंग्स ऑफ फाइर।
- गिजुभाई बढ़ेका द्वारा दिवास्वप्न।
- इवान इलिच द्वारा निर्विद्यालयीकरण समाज।
- ओम प्रकाश बाल्मिकी द्वारा जूठन।
- 1986 की शिक्षा नीति।
- यशपाल समिति रिपोर्ट-बिना कठिनाई भार के अधिगम ।

ई.पी.सी.-02 शिक्षा में नाट्य एवं कला

कोर्स न0 : ई.पी.सी.-02

कोर्स क्रेडिट :02

सैद्धान्तिक : 40 अंक

प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- नाटक की अवधारणा और शिक्षा के लिए इसकी प्रासंगिकता को समझना।
- विभिन्न दृष्टिकोण से कल्पना के माध्यम से वास्तविकता को समझना।
- सक्रिय और निष्क्रिय क्षण की उत्पत्ति की अवधारणा एवं पूर्ननिर्माण करना।
- शिक्षा के लिए उनकी प्रासांगिकता के साथ दृश्य कला और शिल्प को समझना।
- समय और जगह की अवधारणा को चेतन-अवचेतन स्थिति के द्वारा समझना।
- अपने आप को समझना और रचनात्मकता को बढ़ाने के लिए स्व-अभिव्यक्ति की क्षमता को बढ़ाना।

इकाई-1 (प्रदर्श कला के रूप में नाटक एवं शिक्षा में इसकी प्रासंगिकता)

- नाटक की अवधारणा एवं शिक्षा में इसकी प्रासंगिकता की समझ।
- शिक्षणशास्त्र के रूप में नाटक/अभिनय।
- नाटक का आयोजन - शुरुआती गतिविधियाँ एवं संसाधन, नाटक से संबंधित मंडली।
- नाटक प्रस्तुती : कहानी, संवाद, पात्र , संकेत, अलग-अलग स्थिति का निर्माण।
- नाटक के अन्य रूप: मंच प्रदर्शन, प्रहसन, नकल करना, नुक्कड़ नाटक मंचन ।
- भारतीय और क्षेत्रीय नाटक परंपराओं का ज्ञान।
- समकालीन भारतीय स्थिति में नृत्य एवं नाटक की सामाजिक प्रासंगिकता।

अध्येता में नाट्य कला की अनुशंसा।

इकाई-2 (दृश्य एवं शिल्प कला)

- दृश्य कला एवं शिल्प का साथ शिक्षा में उनकी प्रासंगिकता की समझ ।
- शिक्षण शास्त्र के रूप में दृश्य कला एवं शिल्प ।
- दृश्य कला एवं शिल्प: विभिन्न रूप, आधारभूत स्रोतों और उनके उपयोग ।
- भारतीय शिल्प परंपरा और क्षेत्रीय लोक कला का ज्ञान ।

- अधिगमकर्ता में दृश्य कला और शिल्प की अनुशंसा।

इकाई-3 (कला समान्वित प्राप्त अधिगम और शिक्षक की भूमिका)

- विद्यालय पाठ्यक्रम के साथ नाटक का एकत्रीकरण एवं जुड़ाव ।
- नृत्य/नाटक अनुसंधान और सह संबंधित क्रियाओं की कला से सह संबद्धता।
- विद्यालयीय पाठ्यचर्चा में कला एवं शिल्प का जुड़ाव ।
- कला समन्वित अधिगम के लिए शिक्षक की तैयारी।
- नृत्य/नाटक में प्रसार एवं अध्ययन में मिडिया तथा प्रौद्यौगिकी की भूमिका ।

व्यवहारिक कार्य (कोई एक)

1. विद्यालय आधारित प्रकरण पर नाटक लिपि की तैयारी।
2. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय स्तर पर कला शिक्षा के लिए बहुसंचार माध्यम से सामग्री की तैयारी।
3. माध्यमिक विद्यालय में कला शिक्षा के लिए अनुदेशन/शिक्षण सामग्री की तैयारी।
4. क्लब आर्ट की तैयारी : उसके उद्देश्यात्मक कार्य और मूल्यांकन।

ई.पी.सी.-03 आई.सी.टी. की समीक्षात्मक समझ

कोर्स न0 : ई.पी.सी.-03 | सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट :02 | प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- ICT को समझना और शिक्षा में उसका उपयोग।
- संगणक हार्डवेयर के विभिन्न हिस्सों को जानना और उसका उपयोग ।
- विभिन्न औपरेटिंग सिस्टम में अन्तर और सिस्टम सॉफ्टवेयर परिवेश के मुख्य कार्यों को समझना।
- शब्द, संसाधन, स्प्रेडशीट, चित्रकारी और प्रस्तुति सॉफ्टवेयर का कौशल पूर्वक उपयोग और शैक्षणिक उपयोग के लिए विभिन्न शिक्षण अधिगम संसाधनों का उपयोग।
- इन्टरनेट का उपयोग एवं दूरस्थ सूचना को प्राप्त करने हेतु इसका उपयोग। इसके माध्यम से संचार एवं सहयोग में सहभागीता।
- सामाजिक आर्थिक सुरक्षा और सूचना एवं संचार प्रौद्यौगिकी के प्रयोग से जुड़े नैतिक मुद्दों को समझना।

पाठ्यक्रम सामग्री

इकाई 1 (आई.सी.टी. और संगणक अनुप्रयोग के आधारभूत सामग्री/मूल तत्व)

- सूचना और संचार प्रौद्यौगिकी: अर्थ, प्रकृति और फायदे ।
- नई सूचना प्रौद्यौगिकी का उद्‌भव: संगणना और दूरसंचार का सम्मिलन।
- कम्प्युटर (संगणक) हार्डवेयर के मौलिक तत्व (रचना, अदा उपकरण, प्रदा उपकरण संग्रहण उपकरण, प्रदर्श उपकरण) हार्डवेयर समस्या दूर करना एवं उपचार।
- संक्रिया पद्धति : अर्थ और प्रकार, संगणक के प्रकार।
- संगणक नेटवर्क : LAN, WAN, इन्टरनेट-अवधारणा एवं संरचना इंटरनेट संसाधन को ज्ञात करना नीविगेट करना, सर्च करना, सेलेक्ट करना ।
- डिजीटर कैमरा, कैम कॉर्डर, स्कैनर, प्रभावकारी श्वेत पट्ट के उपयोग और मल्टीमीडिया संसाधन के सृजन और उपयोग हेतु मल्टीमिडिया प्रोजेक्टर।
- संगणक सूरक्षा : हैकिंग, वाइरस, स्पाईवेयर, दुरूपयोग, एण्टीवाइरस फायर बॉल और सुरक्षित अभ्यास।

इकाई-2 (संगणक मृदुउपागम की बुनियाद)

- सॉफ्टवेयर : अर्थ एवं प्रकार (प्रणाली सॉफ्टवेयर, अनुप्रयोग सॉफ्टवेयर, स्वामित्व सॉफ्टवेयर, खुले संसाधन साफ्टवेयर, शेयर वेयर और फ्रीवेयर)

- खुले साधन वाले सॉफ्टवेयर : अवधारणा, दर्शन, प्रकार एवं फायदे, खुले संसाधन वाले शैक्षिक सॉफ्टवेयर।
- MS-WINDOWS से परिचय : डेस्कटॉप नेविगेट करना, नियंत्रण पैनल, फाइल प्रबंधन, एक्सप्लोरर एवं अतिरिक्त सहायक ।
- MS-OFFICE (एम.एस. ऑफिस) से परिचय एवं ओपेन आफिस
- माइक्रोकम्प्यूटर उपयोग के मूल तत्व (वर्ड प्रोसेसिंग, स्प्रेडशीट, प्रस्तुती और चित्रकारी) एवं इसके शैक्षिक अनुप्रयोग।
- उपयोगी औजार (संसाधन) : Pdf बनाने वाला, फाइल संग्राहक, फाइल बदलाव करने वाला,एण्टीवाइरस।

  मल्टीमिडिया के अर्थ, प्रकार, फायदे एवं मल्टीमिडिया संसाधन का मूल्यांकन, शिक्षा में मल्टीमिडिया के विकास एवं प्रयोग।

  ई-विषय वस्तु: रूपरेखा, विकास, मानक, अधिगम सामग्री और पुन:उपयोग और ऑथरिंग टूल ।

इकाई-3 (आई.सी.टी. आधारित शिक्षा एवं मूल्यांकन)

- संगणक आधारित अनुदेश, संगणक सहायक अनुदेश और संगणक प्रबंधित अनुदेश ।
- शैक्षिक सॉफ्टवेयर अवधारणा, शैक्षिक सॉफ्टवेयर की जरूरत एवं मूल्यांकन।
- प्रौद्योगिकी सहायक प्रस्तुती/प्रयोजना कार्य/दत्त कार्य : अवधारणा, विद्यार्थियों के शैक्षिक मल्टीमिडिया प्रस्तुती (डड)/परियोजना/दत्त कार्य की जरूरत एवं मूल्यांकन।
- साहित्यिक चोरी : प्रौद्योगिकी समर्थित विद्यार्थियों के दत्त कार्य/परियोजना कार्य के संबंध में साहित्यिक चोरी की अवधारणा/ साथ ही शिक्षा में साहित्यिक चोरी को कम करने के उपाय।
- विद्यालयीय स्थिति में प्रश्न बैंक का विकास करना (मूल्यांकन प्रक्रिया सन्निहित) : हॉट पोटैऔस का उपयोग करते हुए विविध प्रकार के प्रश्न जैसे - बहुविकल्पी प्रश्न, लघु उत्तरीय, उलझे वाक्य के रूप में प्रश्न, क्रॉसवर्ड, मिलान करने वाले प्रश्न, रिक्त स्थान पूर्ति वाले अभ्यास प्रश्नों से प्रश्न बैंक का विकास ।

अभ्यासार्थ कार्य (कोई एक)

1. वर्ड प्रोसेसर का व्यवहार, स्प्रेडशीट तथा प्रस्तुतीकरण सॉफ्टवेयर विभिन्न शिक्षण अधिगम स्रोत।
2. इन्टरनेट स्रोत का पता लगाना: संचालन, खोज, चुनाव, सेविंग और मूल्यांकन (मानक इन्टरनेट मूल्यांकन कटेगरी)।
3. मल्टीमीडिया का मूल्यांकन करना, सीडी, रॉमस, मानक कटेगरी तथा अध्ययन मल्टीमीडिया मूल्यांकन उपलब्ध है- एच टी टी पी://डब्लू. डब्लू. डब्लू. टीम. आरजी. यू के।
4. सूचना तथा संप्रेषण प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन विद्यालय शिक्षा तथा शिक्षक शिक्षा के विभिन्न संगठन।
5. ई एक्स ई अधिगम विषय का व्यवहार करते हुए-मल्टीमीडिया का विकास: ई-कन्टेन्ट।

पी.एस.एस.: 02 हिन्दी शिक्षण-विधि

कोर्स न0 : 7A
कोर्स क्रेडिट :02

सैद्धान्तिक : 40 अंक
प्रायोगिक : 10 अंक

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- हिन्दी शिक्षण में मातृभाषा और राष्ट्रीय भाषा के प्रकृति तथा उद्देश्यों के समझ का विकास करना।
- हिन्दी शिक्षण के व्यवहारिक उद्देश्यों की समझ ।
- सीखने वाले के बीच भाषा कौशल और योग्यता के विकास एवं क्षमता को विकसित करना।
- भाषा शिक्षा नीति और संवैधानिक प्रावधानों के बारे में ज्ञान प्राप्त होना।
- माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में बिहार विद्यालय परीक्षा समिति एवं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित सामग्री में योग्यता हासिल करना।
- कक्षा-कक्ष के वास्तविक वातावरण में हिन्दी शिक्षण का उपयोग करते हुए आधुनिक विधि से अवगत कराना।

इकाई-01 प्रकृति, क्षेत्र और लक्ष्य

- भाषा के अर्थ और कार्य। बच्चों की शिक्षा में मातृभाषा की भूमिका।
- हिन्दी भाषा के गुण-धर्म के आधार पर विशेष रूप और इसकी सार्वत्रिक सार्थकता, संस्कृति, सामाजिक, व्यावहारिक, साक्षरता एवं बहुभाषी।
- हिन्दी शिक्षण में मातृभाषा और राष्ट्रीय भाषा का लक्ष्य एवं उद्देश्य।
- हिन्दी के विभिन्न रूप:-हिन्दी एक ज्ञान की भाषा के रूप में, हिन्दी-प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक भाषा के रूप में, हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में।
- मातृभाषा शिक्षण में कठिनाइयाँ।

इकाई-II (हिन्दी का पाठ्यक्रम)

- केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् और बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्यक्रम का अर्थ और सिद्धान्त।
- हिन्दी पाठ्यक्रम में सुधार:-भाषा शिक्षण के संदर्भ में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना-2005, बिहार पाठ्यक्रम संरचना-2008 का समीक्षात्मक मूल्यांकन।

- भाषा शिक्षा की संवैधानिक प्रावधान और नीतियाँ:-भारत में भाषा की स्थिति, अनुच्छेद-343 से 351 तक, 350A , कोठारी आयोग (1964-66): राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 कार्यक्रम का कार्य-1992
- हिन्दी में पाठ्यपुस्तकें-महत्व एवं गुणवत्ता।

इकाई-III (शिक्षण-विधि और विशिष्ट अनुदेशनात्मक तकनीकियाँ)

- गद्य शिक्षण:-कहानी, नाटक, निंबध और उपन्यास के लिए गद्य पाठ के योजना में महत्वपूर्ण कदम।
- कविता शिक्षण:-कविता पाठ के उद्देश्य, कविता पाठ के महत्व, कविता शिक्षण की योजना में महत्वपूर्ण कदम।
- व्याकरण शिक्षण:-हिन्दी शिक्षण में व्याकरण का स्थान, आगमनात्मक और निगमनात्मक विधि और उससे संबंधित गुण।
- वाचन शिक्षण :— अच्छे वाचन की विशेषता, पठन (वाचन) के प्रकार - गम्भीर वाचन, द्रुतवाचन, विस्तृत वाचन, मौन वाचन, सस्वर वाचन, वाचन के विभिन्न विधियाँ - लय-विधि, वर्णमाला विधि, शब्द विधि और वाक्य विधि।
- शब्दावली शिक्षण:- इसके अर्थ और प्रकार, मौखिक कार्य, वाद-विवाद द्वारा शब्दावली की रचना, वाक्य बनाना।
- लेखन और संरचना शिक्षण:-पत्रलेखन, निंबध लेखन और सारांश लेखन।

व्यवहारिक (कोई एक)

- भाषा नीतियों में दिये गये कोठारी कमिशन, एन० पी० ई०(राष्ट्रीय शिक्षा निति) 1986 और पी० ओ० ए० (कार्यक्रम का कार्य) 1992 और भारतीय संविधान में दिये गये भाषा के आधार पर प्रतिवेदन तैयार करना।
- पास-पड़ोस के किसी पाँच विद्यालयों का निरीक्षण कर त्रिभाषा सूत्र जो विद्यालय में चलाये जा रहे हैं उस पर एक प्रतिवेदन तैयार करना।
- हिन्दी पाठ्यपुस्तकों (6 से 12 तक) की एक सूची तैयार करने में जिनका आधार प्रकरण और क्रियाविधि हो। (i) भाषा और लिंग, (ii) भाषा और शांति। पाठ्यक्रम में उनके प्रभाव के लिए प्रतिवेदन तैयार करना।
- अपने पास-पड़ोस के 5 विद्यालयों का सर्वेक्षण कर पता करना।
  (i) हिन्दी के परिचय का स्तर।
  (ii) कक्षा-कक्ष में प्रयोग होनें वाले पाठ्यपुस्तकें।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में अधिगमकर्ता और शिक्षकों के द्वारा चुनौति का सामना हेतु प्रतिवेदन तैयार करना।

पी.एस.एस. - 03 संस्कृत शिक्षण विधि

कोर्स न0 : 7A — सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट :02 — प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- संस्कृत भाषा के महत्व एवं इसके सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के भूमिका को समझना ।
- संस्कृत शिक्षण के व्यावहारिक उद्देश्यों को समझना ।
- शिक्षार्थियों के भाषा कौशल, क्षमता का विकास करना ।
- भाषा शिक्षण के संवैधानिक प्रावधानों एवं नीतियों के बारे में ज्ञान हासिल करना ।
- माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित सामग्री उपलब्ध कराने की योग्यता विकसित करना।
- संस्कृत शिक्षण की आधुनिक विधियों की जानकारी और वास्तविक कक्षा स्थिति में उपयोग करना ।

इकाई-01 (प्रकृति, क्षेत्र और लक्ष्य)

- भाषा-इसका अर्थ और कार्य: छात्र की शिक्षा में शास्त्रीय भाषा की भूमिका।
- संस्कृत भाषा के विशिष्ट गुणधर्म (प्रारूप) और इसकी सर्वाधिक सार्थकता-संस्कृति, समाजिकता, व्यवहारिकता साक्षरता और बहुभाषाविशेषता।
- शास्त्रीय भाषा के रूप में संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य एवं लक्ष्य।
- संस्कृत भाषा एवं साहित्य, संस्कृत भाषा एवं भारतीय भाषा, संस्कृत भाषा का सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व, संस्कृत एक आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में।
- पुरातन और शास्त्रीय भाषा के शिक्षण में सिद्धान्त और कठिनाइयाँ।

इकाई-02 (संस्कृत का पाठ्यक्रम)

- पाठ्यक्रम संरचना के अर्थ और सिद्धान्त
- केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् और बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में संस्कृत पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक अध्ययन।
- संस्कृत पाठ्यक्रम में सुधार - भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना-2005, बिहार पाठ्यक्रम संरचना-2008 का समीक्षात्मक मूल्यांकन।

- भाषा शिक्षा की संवैधानिक प्रावधान और नितियाँ :-भारत में भाषाओं की स्थिति:अनुच्छेद 343-351, 350A, कोठारी आयोग (1964-66), राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986, कार्यक्रम का कार्य-1992।
- संस्कृत में पाठ्य पुस्तकें –महत्व और गुणवत्ता।

इकाई-III-विशिष्ट निर्देशनात्मक तकनीकी एवं शिक्षण विधि

- गद्य शिक्षण-नाटक, कहानी और उपन्यास का शिक्षण, गद्य पाठ की योजना में महत्वपूर्ण कदम।
- कविता शिक्षण- कविता पाठ का उद्देश्य, कविता पाठ का महत्व, कविता पाठ योजना में महत्वपूर्ण कदम।
- व्याकरण शिक्षण- संस्कृत के शिक्षण में व्याकरण का स्थान। आगमनात्मक एवं निगमनात्मक विधियाँ और उनके सम्बन्धित गुण।
- वाचन शिक्षण: अच्छे वाचन के गुण धर्म। वाचन के प्रकार – द्रुत वाचन, अनुकरण वाचन, गहन वाचन, विस्तृत-वाचन, मौन वाचन, सस्वर वाचन। वाचन की विविध विधियाँ:- लय विधि, वर्णमाला विधि, शब्द विधि और वाक्य विधि।
- शब्दावली शिक्षण- इसके अर्थ और प्रकार, मौखिक कार्य, वाद विवाद द्वारा शब्दावली की रचना, वाक्य बनाना।
- संरचना एवं लेखन का शिक्षण:-पत्र लेखन, निबन्ध लेखन और सार लेखन।

व्यावहारिक कार्य (कोई एक) :-

- भारत के संविधान में दिये गये भाषा के स्तर तथा कोठारी आयोग में भाषा नीतियाँ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 और कार्यक्रम का कार्य-1992 पर प्रतिवेदन, तैयार करना।
- पास -पड़ोस के पाँच विद्यालयों को देखकर (साक्षात्कार) त्रिभाषासूत्र के आधार पर विद्यालयों को भाषा की उपयोगिता पर प्रतिवेदन तैयार करना।
- कक्षा (VI - X) के संस्कृत पाठ्य पुस्तकों पर आधारित कार्यप्रणालियों और प्रकरणों की सूची तैयार करना जिनमें निम्नलिखित तथ्य दिये गये हों।

  (a) भाषा और लिंग

  (b) भाषा और शान्ति / पाठ्यपुस्तकों के चिन्तन पर प्रतिवेदन तैयार करना।
- पास-पडोस के पाँच विद्यालयों का सर्वेक्षण कर पता करना -1. संस्कृत के स्तर का परिचय 2. कक्षा में पाठ्य पुस्तकों एवं सामग्रियों का उपयोग।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में चुनौतियों को सामना करते हुए शिक्षक एवं विद्यार्थियों पर एक प्रतिवेदन तैयार करना।

पी.एस.एस. - 04 उर्दू शिक्षण विधि

कोर्स न0 : 7A
कोर्स क्रेडिट :02

सैद्धान्तिक : 40 अंक
प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- मातृभाषा के रूप में उर्दू शिक्षण के उद्देश्य, प्रकृति और उसके समझ को विकसित कर सकेंगे।
- उर्दू शिक्षण के व्यावहारिक उद्देश्यों को समझ सकेंगे।
- अधिगमकर्त्ताओं में भाषा कौशलों को आत्मसात करने की क्षमताओं को विकसित कर सकेंगे।
- संवैधानिक प्रावधानों और भाषा शिक्षा नीतियों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रदत्त माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में विषय वस्तु को समझने की क्षमता को विकसित कर सकेंगे।

इकाई-01 (प्रकृति, क्षेत्र और लक्ष्य)

- भाषा: इसके अर्थ एवं कार्य। बच्चों की शिक्षा में मातृभाषा की भूमिका।
- उर्दू भाषा के विशेष प्रारूप(गुण-धर्म) और इसकी सार्वत्रिक सार्थकता-संस्कृति, सामाजिक, व्यवहारिक, साक्षरता, एवं बहुभाषायी।
- मातृभाषा के रूप में उर्दू शिक्षण का लक्ष्य एवं उद्देश्य।
- भारत में उर्दू भाषा की भूमिका:विभाजन के पूर्व और पश्चात्, उर्दू के विभिन्न रूप (प्रकार); उर्दू एक ज्ञान की भाषा के रूप में, उर्दू प्रथम, द्वितीयक और तृतीयक भाषा रूप में, उर्दू अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में।
- मातृ भाषा शिक्षण की कठिनाईयाँ।

इकाई-02 (उर्दू का पाठ्यक्रम)

- पाठ्यक्रम निर्माण का अर्थ एवं सिद्धान्त।
- केन्द्रिय विद्यालय परीक्षा समिति, भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् और बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में उर्दू पाठ्यक्रम का समीक्षात्मक अध्ययन।
- उर्दू पाठ्यक्रम में सुधार:-भाषा शिक्षण के संदर्भ में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना-2005, बिहार पाठ्यक्रम संरचना-2008 का समीक्षात्मक मूल्यांकन।

- भाषा शिक्षण के संवैधानिक प्रावधान और नीतियाँ:-भारत में भाषा की स्थिति, अनुच्छेद-343 से 351 तक, 350A, कोठारी कमिशन (1964-66), राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986, कार्यक्रम का कार्य (पी ओ०ए०)-1992

इकाई-03 (विशिष्ट अनुदेशनात्मक तकनीकी और शिक्षण विधि)

- गद्य शिक्षण की विधि:- दास्तां, अफसाना, उपन्यास, नाटक, मकतब और इन्शां । मुख्य रूप से गद्य पाठ योजना में महत्वपूर्ण कदम।
- कविता शिक्षण की विधि:-नजाम, गजल और रूबाई। कविता पाठ के उद्देश्य, कविता पाठ के महत्व, कविता योजना के मुख्य कार्य (महत्वपूर्ण कदम)।
- व्याकरण शिक्षण की विधि:-उर्दू शिक्षण में व्याकरण का स्थान, आगमनात्मक और निगमनात्मक विधि और उसके संबन्धित गुण।
- वाचन शिक्षण :-अच्छे पठन की गुण। वाचन के प्रकार:- द्रुत वाचन, गम्भिर वाचन, मौन वाँचन, सस्वर वाचन। वाचन की विभिन्न विधियाँ–लय विधि, वर्णमाला विधि, शब्द विधि और वाक्य विधि।
- शब्दावली शिक्षण - इसके अर्थ और प्रकार।
- लेखन और मिश्रित (रचना) कार्य का शिक्षण:-खुदूट निगारी (पत्र लेखन), मजमून निगारी (निबंध लेखन), और इख्तेसार निगारी (सार-लेखन)।

व्यावहारिक (कोई एक)

- कोठारी आयोग के भाषा नीतियों में दिये गये तथा भारतीय संविधान में दिये गये भाषा के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 और कार्यक्रम-1992 पर प्रतिवेदन तैयार करना।
- पास-पड़ोस के किसी पाँच विद्यालयों का नीरिक्षण कर त्रिभाषा-सूत्र जो विद्यालय में चलायें जा रहे हैं उस पर एक प्रतिवेदन तैयार करना।
- उर्दू पाठ्यपुस्तक (कक्षा 6 से 12 तक) की एक सूची तैयार करें जिनका आधार प्रकरण और क्रियाविधि (1) भाषा और लिंग, (2) भाषा और शान्ति। पाठ्यक्रम में उनके चिन्तन के लिए प्रतिवेदन तैयार करना।
- अपने आस-पड़ोस के पाँच विद्यालयों का सर्वेक्षण कर पता करना-
- (i) उर्दू के परिचय का स्तर।
- (ii) कक्षा-कक्ष में प्रयोग होने वाले पाठ्यपुस्तकें ।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में चुनौतियों का सामना करते हुए शिक्षक एवं विद्यार्थियों पर एक प्रतिवेदन तैयार करना।

पी.एस.एस. - 05 अरबी शिक्षण विधि

कोर्स न0 : 7A | सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट :02 | प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- अरबी भाषा की प्रकृति, विशेषता और महत्व को समझ सकेंगे।
- अरबी शिक्षण एक विदेशी भाषा के रूप में उसके लक्ष्य एवं उद्देश्यों को जान सकेंगे।
- अरबी शिक्षण द्वारा मातृभाषा के स्थान को उचित सिद्ध कर सकेंगे।
- संवैधानिक प्रावधानों और भाषा शिक्षा नीतियों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रतिपादित विषय वस्तु को समझने या आत्मसात करने की क्षमता उत्पन्न कर सकेंगे।

इकाई--01 (प्रकृति क्षेत्र और लक्ष्य)

- भाषा: इसके अर्थ एवं कार्य।
- अरबी भाषा के विशेष प्रारूप (गुण-धर्म) और इसकी सार्वत्रिक सार्थकता- सांस्कृतिक, व्यवहारिक, साहित्यिक एवं बहुभाषायी।
- सुविदेशी भाषा के रूप में अरबी शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य।
- एक विदेशी भाषा सीखने के संघटक के रूप में-ध्वनि प्रणाली, संरचनात्मक उपकरणों, शब्दावली।
- भारत में अरबी भाषा का विकास।
- बिहार में अरबी भाषा के विकास से संबन्धित समस्या।

इकाई-02 (अरबी का पाठ्यक्रम)

- पाठ्यक्रम निर्माण के अर्थ और सिद्धान्त विशेष रूप से अरबी भाषा के संदर्भ में।
- त्रिभाषा सूत्र में अरबी का स्थान।
- बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अरबी पाठ्यक्रम में उभरते समीक्षात्मक अध्ययन।

- भाषा शिक्षण के संवैधानिक प्रावधान और नीतियाँ-भारत में भाषा की स्थिति, अनुच्छेद-343 से 351 तक, 350(A), कोठारी आयोग (1964-66), राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986, कार्यक्रम का कार्य (पी० ओ० ए०)-1992।
- अरबी की पाठ्यपुस्तकें -महत्त्व एवं गुणवत्ता।

इकाई-03(विशिष्ट अनुदेशात्मक तकनीकियाँ और शिक्षण-विधि)

- गद्य शिक्षण :- मक्कमह, खिस्सा (कहानी) उपन्यास, मुख्य रूप से गद्य पाठ योजना में महत्वपूर्ण कदम।
- कविता शिक्षण:- तस्सबीब, गजल, मदह, हेजा, रासा और फखरा। कविता पाठ के उद्देश्य, कविता पाठ के महत्व, कविता योजना में महत्वपूर्ण कदम (मुख्य कार्य)
- व्याकरण शिक्षण :- अरबी शिक्षण में व्याकरण का स्थान, आगमनात्मक और निगमनात्मक विधि और उसके संबन्धित गुण।
- वाचन शिक्षण :- अच्छे पठन की विशेषताएँ। वाचन के प्रकार- द्रुत-वाचन गम्भिर वाचन, मौन वाचन, सस्वर वाचन। वाचन की विभिन्न विधियाँ:-लय विधि, वर्णमाला विधि, शब्द विधि और वाक्य विधि।
- शिक्षण शब्दावली - इसके अर्थ और प्रकार।
- लेखन और रचना कार्य का शिक्षण- पत्र लेखन, निवंध लेखन, सार लेखन।

व्यावहारिक (कोई एक)

- कोठारी आयोग के भाषा नीतियों में दिये गये तथा भारतीय संविधान में दिये गये भाषा के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा निती-1986 और कार्यक्रम का कार्य-1992 पर प्रतिवेदन तैयार करना।
- पास-पड़ोस के किसी पाँच विद्यालयों का नीरीक्षण कर त्रिभाषा-सूत्र जो विद्यालय में चलाये जा रहें हैं उस पर एक प्रतिवेदन तैयार करना।
- अरबी पाठ्यपुस्तक (कक्षा-6 से 12 तक) की एक सूची तैयार करें जिनका आधार प्रकरण और क्रियाविधि -भाषा और लिंग, भाषा और शान्ति। पाठ्यक्रम में उनके चिंतन के लिए प्रतिवेदन तैयार करना।
- अपने पास-पड़ोस के पाँच विद्यालयों का सर्वेक्षण कर पता करना-
  - (i) अरबी के परिचय का स्तर।
  - (ii) कक्षा-कक्ष में प्रयोग होने वाले पाठ्यपुस्तकें।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अधिगमकर्ता और शिक्षकों के द्वारा चुनौती का सामना हेतु प्रतिवेदन तैयार करना।

पी.एस.एस. - 06 (पारसी) परसेयन शिक्षण विधि

कोर्स न0 : 7A
कोर्स क्रेडिट :02

सैद्धान्तिक : 40 अंक
प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- परसेयन और उसके सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के महत्व और भूमिका को समझ सकेंगे।
- पारसी शिक्षण के व्यवहारिक उद्देश्यों को समझ सकेंगे।
- अधिगम कर्त्ताओं में भाषा कौशलों को आत्मसात करने की क्षमता का विकास कर सकेंगे।
- संवैधानिक प्रावधानों और भाषा शिक्षा नीतियों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रतिपादित विषयवस्तु को समझने या आत्मसात करने की क्षमता विकसित कर सकेंगे।

इकाई-01 (प्रकृति, क्षेत्र और लक्ष्य)

- भाषा: इसके अर्थ एवं कार्य। बच्चों की शिक्षा में शास्त्रीय भाषा की भूमिका।
- परसेयन भाषा के विशेष प्रारूप (गुण-धर्म) और इसकी सार्वत्रिक सार्थकता-सांस्कृतिक, सामाजिक, व्यवहारिक, साहित्यिक एवं बहुभाषायी।
- शास्त्रीय भाषा के रूप में परसेयन शिक्षण का लक्ष्य एवं उद्देश्य।
- परसेयन भाषा और साहित्य, परसेयन भाषा और भारतीय भाषा, परसेयन भाषा में सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व। परसेयन एक आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में।
- शास्त्रीय भाषा शिक्षण के सिद्धान्त और कठिनाइयाँ ।

ईकाई-02 (परसेयन का (पारसी) पाठ्यक्रम)

- पाठ्यक्रम संरचना के सिद्धान्त और अर्थ।
- बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में परसेयन पाठ्यक्रम में उभरते समीक्षात्मक अध्ययन।
- त्रिभाषा सूत्र में परसेयन का स्थान।

- भाषा शिक्षण के संवैधानिक प्रावधान और नीतियाँ-भारत में भाषा की स्थिति, अनुच्छेद-343 से 351 तक, 350A, कोठारी आयोग (1964-66), राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986, कार्यक्रम का कार्य (पी०ओ०ए०)-1992।

इकाई-03 (विशिष्ट अनुदेशनात्मक तकनीकियाँ और शिक्षण विधि)

- गद्य शिक्षण विधि:- दास्तां-ए-कोंता (लघु कथा) हिकायत (कहानी), रूमण (उपन्यास) तमशील (नाटक), तक्किद (समीक्षा), स्वानीय (जीवन-वृत), और खुद-नविसत (आत्मा-कथा) मुख्य रूप से गद्य पाठ योजना में महत्वपूर्ण कदम।
- कविता शिक्षण : हम्द, नात्, गजल, रूबाई, मशनवी और कशिदाछ, कविता पाठ के उद्देश्य, कविता पाठ के महत्व, कविता योजना के मुख्य कार्य (महत्वपूर्ण कदम)
- वाचन शिक्षण :-अच्छे पठन की विशेषताएँ। वाचन के प्रकार:- द्रुत-वाचन, गम्भीर वाचन, मौन-वाचन, सस्वर वाचन। वाचन की विभिन्न विधियाँ-लय विधि, वर्णमाला, शब्द विधि और वाक्य विधि।
- शब्दावली शिक्षण - इसके अर्थ और प्रकार।
- लेखन और रचना कार्य का शिक्षण:-पत्र लेखन, निबंध लेखन, और सार लेखन।

व्यावहारिक (कोई एक)

- भाषा नीतियों में दिये गये कोठारी कमिशन एन०पी०ई०-1986 और पी० ओ० ए० (कार्यक्रम का कार्य)-1992 और भारतीय संविधान में दिये गये भाषा के आधार पर प्रतिवेदन तैयार करना।
- पास-पड़ोस के किसी पाँच विद्यालयों का निरीक्षण कर त्रिभाषा सूत्र जो विद्यालय में चलाये जा रहे हैं उस पर एक प्रतिवेदन तैयार करना।
- परसेयन पाठ्यपुस्तक (कक्षा 6 से 12 तक) की एक सूची तैयार करें जिनका आधार प्रकरण और क्रियाविधि-
  (i) भाषा और लिंग।
  (ii) भाषा और शान्ति। पाठ्यक्रम में उनके चिंतन के लिए प्रतिवेदन तैयार करना।
- अपने आस-पड़ोस के पाँच विद्यालयों का सर्वेक्षण कर पता करना-
  (i) परसेयन के परिचय का स्तर।
  (ii) कक्षा-कक्ष में प्रयोग होने वाले पाठ्यपुस्तकें।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अधिगमकर्ता और शिक्षकों के द्वारा चुनौती का सामना हेतु प्रतिवेदन तैयार करना।

पी.एस.एस. - 07 इतिहास शिक्षण विधि

कोर्स न0 : 7A **सैद्धान्तिक : 40 अंक**

कोर्स क्रेडिट :02 **प्रायोगिक : 10 अंक**

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- इतिहास शिक्षण की प्रकृति, महत्व एवं उसका दायरा (क्षेत्र) को समझने में ।
- इतिहास शिक्षण के व्यावहारिक उद्देश्यों को समझने में।
- B.S.E.B. द्वारा निर्धारित सामग्री में योग्यता हासिल करने के लिए माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में C.B.S.E. विभिन्न कार्यनीतियों, तकनीकियों और इतिहास शिक्षण कौशल में योग्यता हासिल करने की समझ ।
- इतिहास शिक्षण में कार्यनीति, तरीका, तकनीक और कौशल में दक्षता हासिल करने के लिए समझ और प्रयोग करने की क्षमता।
- विवादास्पद विषय अध्यापन के दौरान कक्षा में एक सामजंस्यपूर्ण वातावरण बनाने के लिए कौशल हासिल करने में सक्षमता की समझ। होना।
- शिक्षण में संबंधित सामग्री के लिए उचित कार्यनीति की योग्यता प्राप्त करने के लिए सिखया जाना ।

Course contents (पाठ्यक्रम सामग्री)

इकाई-01 (प्रकृति, महत्व और इतिहास शिक्षण पढ़ाने का उद्देश्य):-

(A) प्रकृति और महत्व:

- परिभाषित अवधारणाएँ एवं इतिहास के घटक।
- भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, विज्ञान और प्रौद्यौगिकी जैसे अन्य विषयों के साथ इतिहास के विभिन्न पहलुओं के सह-संबन्ध।
- इतिहास शिक्षण का महत्व।

(B) लक्ष्य और उद्देश्य:

- इतिहास शिक्षण का सामान्य उद्देश्य ।
- इतिहास शिक्षण का उद्देश्य:- शैक्षिक एवं व्यवहारिक और पाठ्यक्रम के साथ उनके संबन्ध।
- ब्लुम वर्गीकरण का शैक्षिक उद्देश्य ।

इकाई-02 (इतिहास पाठ्यक्रम)

- पाठ्यक्रम निर्माण का सिद्धांत
- इतिहास पाठ्यक्रम और राज्य, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद् (एन. सी. इ. आर. टी.)

पाठ्यपुस्तक विवाद, इतिहास पाठ्यक्रम केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, आई. सी. एस. ई., बिहार विद्यालय परीक्षा समिति में इतिहास पाठ्क्रम का मूल्यांकन करें।

- ऐतिहासिक महत्व का चयन और उसकी संगठन के -
  (a) सामान्य सिद्धांत
  (b) विशिष्ट सिद्धांतो-सांस्कृतिक युग, ग्रन्थ सूची विषयक, कलानुक्रमिक (कालक्रमबद्ध), सामयिक (किसी स्थान संबंधी), एकीकरण (सममलन), सॅकिद्रिक, सर्पील रेखा (कुंडली एवं इकाई के अनुसार।)
- एक अच्छा इतिहास की पाठ्यपुस्तक के गुण को बताएँ।
- इतिहास के पाठ्यक्रम सुधार:-एन. सी. एफ.-2005 के महत्वपूर्ण मूल्यांकन, सामाजिक विज्ञान शिक्षण के संदर्भ में बी. सी. एफ.-2008 की विवेचना करें।

इकाई-03 (प्रशिक्षण, कार्यनीति एवं इतिहास शिक्षण के विधियाँ)

- इतिहास शिक्षण की विधियाँ-विवेचनात्मक-निगमनात्मक विधि, कहानी कहने की विधि, व्याख्यान विधि, वाद-विवाद (परिचर्या) विधि, स्रोत विधि, परियोजना और समस्या समाधान (समाधानकर्त्ता) बताएँ।
- शिक्षण की तकनीक (तरीका)-अनुकरण, खेल अवलोकन (निरीक्षण) विधि, केस अध्ययन, विचार मंथन, सामूहिक शिक्षण को स्पष्ट करें।
- समूह में अधिगम : सहकारी और सहयोगी शिक्षण, विजातीय (विषम) कक्षा की जरूरतों को संबोधित करते हुए शिक्षण विधि को बताएँ।
- बिना समस्या के इतिहास सीखने में आई. सी. टी. का उपयोग को बताएँ।
- इतिहास में विवादस्पद विषय का अध्ययन है स्पष्ट करें।

व्यावहारिक कार्य (कोई एक) :

शिक्षक की आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम (पाठ्यक्रम के आवश्यकता के अनुसार छात्र/छात्राध्यापक बना सकता है)

इतिहास के बीस स्त्रोतों का चुनाव और दस्तावेज एवं शिक्षण का उद्देश्यात्मक तैयारी करना ताकि हर एक स्त्रोत के द्वारा एक शिक्षण विधि प्राप्त हो सके।

- विद्यालयों में इतिहास शिक्षण का लक्ष्य और उद्देश्य : विभिन्न आयोग का विश्लेषण और उसके तुलनात्मक मूल्यांकन की अनुशंसा करने की विवेचना करें।
- वर्ग VI से XII के किसी बोर्ड का इतिहास पाठ्यक्रम का विषय सूची का विश्लेषण और विभिन्न सिद्धान्त/तरीका/पहुँच से संबन्धित रिपोर्ट बनाना, जो कि इतिहास अध्ययन के लिए स्वीकार कर, स्थापित किया जाए।
- इतिहास शिक्षण के किसी विषय की पाठ योजना तैयार करें ।

पी.एस.एस. - 08 नागरिक शास्त्र शिक्षण विधि

कोर्स न0 : 7A
कोर्स क्रेडिट :02

सैद्धान्तिक : 40 अंक
प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- नागरिकशास्त्र शिक्षण की प्रकृति, विषय क्षेत्र (विस्तार) और महत्व की समझ विकसित करना।
- नागरिकशास्त्र शिक्षण के व्यावहारिक उद्देश्यों की समझ विकसित करना।
- B.S.E.B., C.B.S.E. के माध्यमिक उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में निर्धारित सामग्री में योग्यता हासिल करने के लिए समझ विकसित करना।
- विभिन्न कार्यनीतियों, तकनीकीओं और नागरिकशास्त्र शिक्षण कौशल में योग्यता हासिल करने के लिए एक समझ विकसित करना।
- विवादास्पद विषय अध्यापन के दौरान कक्षा में एक सामंजस्यपूर्ण वातावरण बनाने के कौशल हासिल करने में सक्षमता की समझ विकसित करना।
- शिक्षण में संबंधित सामग्री के लिए उचित कार्यनीति की योग्यता विकसित करना।

इकाई-1 (नागरिकशास्त्र शिक्षण का प्रकृति, विषय क्षेत्र और उद्देश्य)

- नागरिकशास्त्र का अवधारणा, अर्थ और परिभाषा।
- माध्यमिक स्तर पर नागरिकशास्त्र शिक्षण का प्रकृति, विषय क्षेत्र और महत्व।
- नागरिकशास्त्र का अन्य विद्यालयी विषय से जुड़ाव (संबंध)।
- नागरिकशास्त्र शिक्षण और राष्ट्रीय राजनीति।
- माध्यमिक स्तर पर नागरिक शास्त्र शिक्षण का सामान्य उद्देश्य।
- माध्यमिक स्तर पर नागरिक शास्त्र शिक्षण का शैक्षिक और व्यावहारिक उद्देश्य।

इकाई-2 (पाठ्यक्रम संरचना का सिद्धान्त)

- पाठ्यक्रम का अर्थ और सिद्धान्त
- विशिष्ट रूप से B.S.E.B, C.B.S.C और I.C.S.E में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पाठ्यक्रम में नागरिक-शास्त्र का स्थान।

- नागरिकशास्त्र में पाठ्यक्रम सुधार-NCF-2005 के समीक्षात्मक अनुशंसा और सामाजिक विज्ञान शिक्षण के संदर्भ में BCF-2008 द्वारा अनुशंसा।
- नागरिक शास्त्र पाठ्यक्रम का संगठन और उपागम के संबंध में सहसंबधं, एकीकरण, सकेन्द्री, सर्पिल रेखा (कुंडली) ईकाई और समय के अनुसार पहुँच।
- माध्यमिक स्तर के वर्त्तमान नागरिक शास्त्र के पाठ्यक्रम में त्रुटि
- नागरिकशास्त्र के मूल पाठ्य पुस्त्क का महत्व और गुण।

इकाई-3 (नागरिकशास्त्र शिक्षण का शैक्षनिक तकनीक)

- शिक्षण की विधि :-

  व्याख्यात्मक आधार- व्याख्या, तर्क-वितर्क, वाद-विवाद, कहानी वाचन विधि।

  अनुसंधात्मक आधारित - प्रयोगात्मक/पूछ-ताँछ/समस्या-समाधान/आलेख ।

  क्रियात्मक आधार - अनुकरण/खेल-कूद, निरीक्षण विधि, स्रोत विधि, केस अध्ययन, परियोजना विधि।
- संगणक सहायतार्थ अनुदेशन, वैकल्पिक ज्ञान पर अधिकार, डाल्टन योजना।
- सामूहिक अधिगम :-सहकारी और सहयोगी शिक्षण, विषमजातिय कक्षा के लिए आवश्यक संबोधन।
- शिक्षण की प्रविधियाँ: प्रश्नात्मक, नाटकीय रूपांतर, वार्तालाप, गतिविधियाँ मस्तिष्क प्रक्षालन/बुद्धिशीजता।

व्यावहारिक कार्य (कोई एक)

- नागरिकशास्त्र किसी कक्षा के पाठ्यक्रम की संरचना का विकास।
- पर्यटन के परिणाम, योजना और संगठन का प्रतिवेदन ।
- माध्यमिक विद्यालय स्तर पर वर्तमान नागरिकशास्त्र पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक अध्ययन।
- अवधारणा, सिद्धान्त और प्रक्रियाओं को पहचाने में विषय-पाठ्य-पुस्तक के इकाई का विश्लेषण, रचना और इसके अन्तर्गत आनेवाले तथ्यों की समझ।
- भूगोल शिक्षण से सबंधीत किसी प्रकरण पर एक आलेख तैयार करना ।

पी.एस.एस. - 09 भूगोल शिक्षण विधि

कोर्स न0 : 7A | **सैद्धान्तिक : 40 अंक**

कोर्स क्रेडिट :02 | **प्रायोगिक : 10 अंक**

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- भूगोल शिक्षण का प्रकृति, विषय क्षेत्र और महत्व की समझ।
- भूगोल शिक्षण के व्यवाहारिक उद्देश्यों की समझ।
- बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में निर्धारित सामाग्री में योग्यता हासिल करने के लिए समझ बनाना।
- माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में विभिन्न कार्यनीतियों, तकनीकीओं और भूगोल शिक्षण कौशल में योग्यता हासिल करने के लिए एक समझ।
- शिक्षण में संबंधित सामग्री के लिए उचित कार्यनीति की योग्यता प्राप्त करना।

इकाई-1 (भूगोल शिक्षण का प्रकृति, क्षेत्र और उद्देश्य)

- भूगोल शिक्षण का प्रकृति, विषय क्षेत्र और महत्व - भूगोल विषय विज्ञान और कला के रूप में, विद्यालयी पाठ्यक्रम में भूगोल का स्थान।
- भूगोल शिक्षण के मूल्य-नैतिक, सौंदर्य संबंधी, उपयोगी, व्यावहारिक, बौद्धिक, व्यवसायिक।
- माध्यमिक विद्यालयी स्तर पर भूगोल शिक्षण के उद्देश्य बिहार के सन्दर्भ में।
- व्यावहारिक अर्थ में शैक्षणिक उद्देश्यों का लेखन और उनके महत्व। ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, कौशल आदि के रूप में इसका वर्गीकरण।

इकाई-2 (भूगोल पाठ्यक्रम)

1. पाठ्यक्रम विकास का अर्थ और सिद्धान्त ।
2. माध्यमिक विद्यालय स्तर पर भूगोल पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण अध्ययन।
3. भूगोल के पाठ्यक्रम सुधार-NCF-2005 के समीक्षात्मक अनुशंसा और सामाजिक विज्ञान शिक्षण के सन्दर्भ में BCF-2008

4. भूगोल विषय में समाजशास्त्र के विकासात्मक समीक्षा।

5. भूगोल के कक्षाओं में पाठ्यपुस्तकों और व्यवहारिक कक्षाओं का महत्व।

इकाई-3 (भूगोल शिक्षण के उपागम और विधियाँ)

- शिक्षण विधि-व्याख्यान विधि, परियोजना विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रेक्षण विधि, प्रयोगशाला विधि, तुलना विधि, चित्र विधि।
- शिक्षण के उपागम-आगमन : निगमन उपागम, वर्णनात्मक उपागम, क्षेत्रीय उपागम, वातावरणीय उपागम, शिक्षक केन्द्रित, शिक्षार्थी केन्द्रित, क्रिया केन्द्रित, पद्धतिमय उपागम।
- भूगोल की समझ में पर्यटन और देशाटन का महत्व।
- शिक्षण की विधियाँ- प्रश्नोत्तर, नाटकीकरण, भूमिका निर्वहन, विचार मंथन।

व्यावहारिक कार्य (कोई एक)

- किसी कक्षा की भूगोल पठ्यक्रम की संरचना के विकास को तैयार करना या रेखांकित करना।
- पर्यटन की योजना और परिणाम की रिपोर्ट तैयार करना ।
- माध्यमिक विद्यालय स्तर पर वर्त्तमान भूगोल पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक अध्ययन।
- अवधारणा, सिद्धान्त और प्रक्रियाओं को पहचाने में विषय-पाठ्यपुस्तक के इकाई का विश्लेषण और विषय रचना और इसके अन्तर्गत आनेवाले तथ्यों की समझ।
- भूगोल शिक्षण से संबंधित किसी विषय पर आलेख तैयार करना।

पी.एस.एस. - 10 अर्थशास्त्र शिक्षण विधि

कोर्स कोड : 7A

कोर्स क्रेडिट :02

सैद्धान्तिक : 40 अंक

प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- अर्थशास्त्र शिक्षण का प्रकृति, विषय क्षेत्र और महत्व की समझ।
- अर्थशास्त्र शिक्षण के व्यवहारिक उद्देश्य की समझ।
- माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में बिहार विद्यालय परीक्षा समिति तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित सामग्री में योग्यता हासिल करना।
- माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र शिक्षण में विभिन्न तकनीकीओं विधियों और योजनाओं को हासिल करना।
- शिक्षण में से संबंधित सामग्री के लिए उपयोगी योजनाओं को उपलब्ध कराना।

इकाई-1 (अर्थ शास्त्र शिक्षण का प्रकृति, विषय क्षेत्र और उद्देश्य)

- अर्थशास्त्र का अर्थ, परिभाषा और अवधारणा।
- माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र शिक्षण का प्रकृति, विषय क्षेत्र और महत्व।
- अन्य विद्यालय विषय के साथ अर्थशास्त्र का संबन्ध।
- माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र शिक्षण का सामान्य उद्देश्य।
- माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र शिक्षण का शैक्षिक और व्यवहारिक उद्देश्य।
- अर्थशास्त्र, भूमंडलीकरण, उदारीकरण, विश्व बैंक, सतत विकास, समाजिक न्याय और विकस की समझ।

इकाई-2 (पाठ्यक्रम संरचना का सिद्धान्त)

- पाठ्यक्रम संरचना का अर्थ और सिद्धान्त।
- विशिष्ट रूप से- बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र का स्थान ।
- अर्थशास्त्र शिक्षण का विकसित तरीका।

- अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम में संगठन और उपागम के सह संबंध, एकीकरण, सकेन्द्री, सर्पिल रेखा (कुंडली), इकाई और समय के अनुसार पहुँच की समझ।
- अर्थशास्त्र में पाठ्यक्रम सुधार, एन०सी०एफ०-2005 का समीक्षात्मक मूल्यांकन और बी०सी०एफ०-2008. सामाजिक विज्ञान शिक्षण के संदर्भ में समझ।

इकाई-03 (अर्थशासत्र शिक्षण के शैक्षणिक तकनीक)

शिक्षण की विधि:-

- वर्णनात्मक विधि -व्याख्या, वादविवाद, तर्क-वितर्क तथा कहानी-कथन विधि।
- अन्वेषण विधि - प्रयोगात्मक/पूछ-ताछ/समस्या समाधान, कार्य।
- क्रियात्मक/गतिविधि आधारित विधि - अनुकरण/खेल-कूद, निरीक्षण विधि, स्रोत-विधि; केस अध्ययन, परियोजना विधि।
- संगणक/कंप्युटर सहायता अनुदेश - मापांक, दक्षता अधिगम, डाल्टन-योजना।
- सामूहिक अधिगम - सहकारी और सहयोगी शिक्षण, विषमजातीय कक्षा के लिए आवश्यक सम्बोधन।
- शिक्षण की तकनीक - प्रश्नात्मक, नाटकीय रूपांतर, वार्तालाप-गतिविधियाँ, मस्तिष्क प्रक्षालन/बुद्धिशीलता।

व्यावाहारिक कार्य (कोई एक)

- क्षेत्रीय 20 लोगों के आर्थिक और अनार्थिक क्रिया-कलापों के बारे में सूचनाओं को संग्रह करना।
- अपने क्षेत्रीय बाजार में 5 सब्जियों का एक सप्ताह में मूल्य परिवर्तन की सारिणी की सूचनाओं का संग्रह कर कक्षा में चर्चा करें।
- किसी बोर्ड के किसी कक्षा का पाठ्यक्रम का प्रारूप तैयार करें।
- अर्थशास्त्र के किसी एक पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण विश्लेषण करना।
- अर्थशास्त्र शिक्षण में प्रासंगिक विषय पर आलेख तैयार करना।

पी.एस.एस. - 11 गृहविज्ञान शिक्षण विधि

कोर्स न0 : 7A सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट :02 प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- ★ गृह विज्ञान शिक्षण के विस्तार एंव महत्व को समझेंगे।
- ★ माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक के विस्तार का गृह विज्ञान शिक्षण के उद्देश्यों का परिचित कराना।
- ★ पाठ्यक्रम के सिद्धांतों को समझ कर एक उपर्युक्त पाठ्यक्रम् तैयार करना।
- ★ स्वास्थ्य, घर प्रबन्धन, बच्चों के पालन पोषण एवं उसके अर्थशास्त्र, वस्त्र, खाद्य एवं पोषण के लिए आवश्यक कौशल और वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त होना।
- ★ गृह विज्ञान शिक्षण के लिए आवश्यक सुविधा और शिक्षण सहायक सामग्री की समझ होना।

पाठ्यक्रम सामग्री

इकाई-01 (गृह विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य और उद्देश्य)

- ★ गृह विज्ञान का अर्थ और उसके महत्व को जानना।
- ★ गृह विज्ञान शिक्षण का दर्शन– रूसो से आधुनिक युग तक ।
- ★ गृहविज्ञान शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य।
- ★ व्यवहारिक सन्दर्भ में उद्देश्यों का वर्गीकरण।
- ★ गृहविज्ञान की क्षेत्र (विस्तार) एवं घटक:-स्वास्थ्य एवं सफाई, खाद्य और पोषण, घर प्रबन्धन, भोजन का संरक्षण, बच्चों का पालन-पोषण, कपड़ा और पहनावा। (संक्षिप्त परिचय)

इकाई-02 (पाठ्यक्रम और गृहविज्ञान की पाठ्य पुस्तक)

- ★ अर्थ एवं पाठ्यक्रम की परिभाषा।
- ★ सिद्धान्तों एवं पाठ्यक्रम के निर्माण का आधार।
- ★ स्कूलों में गृहविज्ञान की वर्तमान पाठ्यक्रम का मूल्यांकन ।
- ★ गृहविज्ञान की पाठ्य-पुस्तक :-कार्य और विशेषताएँ ।
- ★ गृहविज्ञान में पाठ्यक्रम सुधार।

इकाई-03 (शिक्षण सहायक एवं अन्य गतिविधियां)

★ गृह विज्ञान प्रयोगशाला:- उपकरण एवं उसके रखरखाव ।

★ माध्यमिक स्तर पर गृहविज्ञान शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री, श्यामपट्ट, फलालेन बोर्ड एवं बुलेटिन बोर्ड, रेडियो, फिल्म, टी.बी. और कम्प्यूटर।

★ भ्रमण एवं यात्राओं की भूमिका ।

★ सह पाठ्यक्रम गतिविधियाँ– समाजीकृत तकनीक, कार्यों की अपेक्षाएँ।

★ जांच एवं खोज का दृष्टिकोण।

व्यावहारिक कार्य (कोई एक)

★ गृहविज्ञान की फाइल की तैयारी करना, जिसमें सम्मलित हो :-

(i) आलेखन (नक्काशी)

(ii) कढ़ाई

(iii) पाक् विधि

★ गृह विज्ञान प्रयोगशाला के लिए योजना बनाना।

★ मध्यवर्गीय आय वाले परिवार का बजट तैयार करना ।

★ ड्राइंग रूप की सजावट/ शयनकक्ष/पढ़ाई कक्ष/बच्चों का कक्ष/अतिथिकक्ष।

★ बीमारी के समय आहार की तैयारी,खून की कमी, मधुमेह, उच्च कोलेस्ट्राल।

पी.एस.एस. - 12 वाणिज्य शिक्षण विधि

कोर्स न0 : 7A
कोर्स क्रेडिट :02

सैद्धान्तिक : 40 अंक
प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- वाणिज्य शिक्षण के महत्व को अनुभव करना।
- वाणिज्य शिक्षक के लक्ष्य एवं उद्देश्यों को समझना।
- वाणिज्य पाठ्यक्रम के निर्माण के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल हासिल करना।
- माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में बिहार विद्यालय परिक्षा समिति, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित सामग्री उपलब्ध कराने की योग्यता विकसित करना ।
- माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर वाणिज्य शिक्षण के दृष्टिकोण व तरीकों से खुद को परिचित करवाना तथा कक्षा में प्रभावी ढ़ंग से इस्तेमाल करना ।

इकाई-01 (वाणिज्य शिक्षा की प्रकृति, आवश्यकता और उद्देश्य)

- वाणिज्य शिक्षा के अर्थ, प्रकृति, आवश्यकता एवं विषय क्षेत्र।
- विद्यालयी स्तर पर वाणिज्य विषय का ऐच्छिक विषय के रूप में समावेशन का न्यायीकरण।
- सामान्य और विशिष्ट उद्देश्य, व्यवहारिक उद्देश्य की प्रकृति।
- उद्देश्य लिखने की तकनीक- शैक्षणिक एवं व्यवहारिक ।
- दैनिक जीवन में वाणिज्य का महत्व ।

इकाई-2 (वाणिज्य और पाठ्यपुस्तक का पाठ्यक्रम)

- पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या की संकल्पना।
- वाणिज्य में पाठ्यक्रम संरचना का सिद्धांत
- **केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड**, भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् और बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के विद्यालयी पाठ्यक्रम में वाणिज्य विषय का स्थान।
- वर्तमान वाणिज्य पाठ्यक्रम का समीक्षात्मक अनुशंसा।
- वाणिज्य विषय में पाठ्यपुस्तक और अन्य पूरक वस्तुएँ–महत्व एवं गुण ।

इकाई-3 (विधि और वाणिज्य शिक्षा प्रदान करने की तकनीक)

- व्याख्यान विधि
- प्रश्नोत्तर विधि
- वाद-विवाद विधि
- परियोजना विधि
- समस्या समाधान विधि
- खेल विधि

व्यावहारिक कार्य (कोई एक)

- किसी बोर्ड के किसी कक्षा के पाठ्क्रम प्रारूप तैयार करना।
- वाणिज्य के पाठ्यक्रम पुस्तक के विषय वस्तु का विश्लेषण।
- वाणिज्य से संबंधित किसी भी विषय पर आलेख तैयार करना।
- किसी बोर्ड के किसी कक्षा के पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक विश्लेषण।

- केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद और बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के विशेष संदर्भ में।
- भौतिक विज्ञान पाठ्यक्रम की सीमाओं का बना रहना - माध्यमिक विद्यालय स्तर पर।
- विज्ञान में पाठ्यक्रम सुधार NCF 2005, BCF 2008 के संदर्भ में विज्ञान शिक्षम का आलोचनात्मक अनुशंसा।

इकाई-3 (भौतिक विज्ञान शिक्षण का तरीका और विधि/दृष्टिकोण)

- भौतिक विज्ञान शिक्षक का गुण एवं क्षमताएँ।
- शिक्षण का तरीका-आगमन-निगमन, विश्लेषण-संश्लेषन, ह्युरिस्टिक, प्रयोगात्मक, समस्या समाधान विधि, परियोजना, व्याख्या विधि, प्रदर्शनात्मक, अभिक्रमित शिक्षण, समूह शिक्षण।
- भौतिक शिक्षण की तकनीकीयाँ–मौखिक, लिखित, सीमुलेशन, ड्रील, आलेख, अनुकरण, टर्म शिक्षण, टास्क एनालाइसि प्रयोगशाला तकनीकी और प्रेक्षण अध्ययन।
- दृष्टिकोणरु/पहुँच -परिभाषा, निर्माण की समझ की स्पष्ट जानकारी या नियत शर्त: तर्क के साथ उदाहरण, तुलनात्मक उदाहरण के साथ।

अभ्यासार्थ कार्य-(कोई एक)

√ भौतिक विज्ञान में, विशेष अधिगम समस्याओं की पहचान।

√ किसी माध्यमिक/उच्च माध्यमिक स्तर के किसी कक्षा मे भौतिक विज्ञान विषय के विषय वस्तु पर समीक्षा।

√ माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर किसी बोर्ड के किसी कक्षा के भौतिक विज्ञान के पाट्य पुस्तक का मूल्यांकन।

√ किसी एक माध्यमिक/उच्चमाध्यमिक स्तर पर भौतिक विज्ञान पाठ्यक्रम की संरचना का निर्माण करें।

√ भौतिक विज्ञान के किसी एक इकाई के कार्यक्रम की निर्देश योजना की तैयारी करना।

पी.एस.एस. - 14 जीव विज्ञान शिक्षण विधि

कोर्स न0 : 7A

कोर्स क्रेडिट :02

सैद्धान्तिक : 40 अंक

प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण कों पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- जीव विज्ञान की शिक्षण का महत्व।
- जीव-विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य का ज्ञान।
- जीव-विज्ञान के पाठ्यक्रम को तैयार करने के लिए समझ एवं कौशल का विकास।
- जीव-विज्ञान में विभिन्न शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग एवं तैयारी।
- जीव-विज्ञान शिक्षण में सह-पाठ्यक्रम क्रियाओं का उपयोग।
- जीव-विज्ञान प्रयोगशाला एवं संग्राहालय का निर्माण।

इकाई-01 (जीवन विज्ञान शिक्षण के प्रकृति, क्षेत्र, लक्ष्य और उद्देश्य)

- जीव विज्ञान शिक्षा की प्रकृति, क्षेत्र तथा महत्व।
- जीव विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य उनके अधिगम परिणामों के रूप मे ।
- जीव विज्ञान शिक्षा का विकास एवं उभरते रूप।
- जीव विज्ञान में अविष्कार और जीव विज्ञान क्षेत्र का विकास और भारत में प्रमुख जीव वैज्ञानिकों का विकास।
- वैज्ञानिक विधि के रूप में जीव विज्ञान शिक्षण के वृहत उद्देश्य एक वैज्ञानिक अभिवृति।

इकाई -02 (जीव विज्ञान पाठ्यक्रम)

- पाठ्यक्रम का अर्थ और परिभाषा।
- जीव विज्ञान में पाठ्यक्रम संरचना का सिद्धांत तथा पाठ्यक्रम का विकास।
- जीव विज्ञान में द्वितीयक माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम के उभरते दोष या सीमायें ।
- विज्ञान में पाठ्यक्रम सुधार - विज्ञान शिक्षण संदर्भ में NCF 2005 एव BCF 2008 की आलोचनात्मक अनुशंसा।
- विज्ञान शिक्षण का तरीका -जीव विज्ञान में बालकेन्द्रित पाठ्यक्रम के विकास पर विचार।

इकाई -03 (जीव विज्ञान शिक्षण की विधियाँ एवं सहायक सामग्रियाँ)

- शिक्षण की विधियाँ - व्याख्यान विधि, प्रदर्शन विधि, व्याख्यान सह प्रदर्शन विधि, खोज विधि (अनुसंधान विधि) प्रयोगशाला विधि, परियोजना विधि, कार्यक्रम अनुदेशन एवं सामूहिक शिक्षण।

- जीव विज्ञान शिक्षण में सहायक सामग्री -श्रव्य, दृश्य एवं श्रव्य-दृश्य।
- जीव विज्ञान शिक्षण में सामुदायिक संसाधनों का उपयोग।
- जीव वैज्ञानिक क्रियाविधि में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का संगठन - विज्ञान क्लब, क्षेत्र भ्रमण, विज्ञान मेला, विज्ञान प्रश्नोत्तरी इत्यादि।
- जैव वैज्ञानिक स्रोत के केन्द्र का संगठन - जीव विज्ञान प्रायोगशाला, और जीव विज्ञान संग्रहालय, मछलीघर का निर्माण और उसकी देखभाल, स्तनधारी और वानस्पतिक बगीचा।

व्यवहारिक कार्य (कोई एक)

- आदर्श प्रारूप की तैयार, प्रयोगशाला/हार्बेरियम/जल जीव शाला/टेरेशियम।
- सामान्य प्रयोगशाला उत्प्रेरक की तैयारी।
- जीव विज्ञान में विशेष अधिगम को पहचानना।
- दो चार्ट और मॉडल की तैयारी।
- जीव विज्ञान के किसी विषय पर एक शैक्षणिक योजना तैयार करना।

पी.एस.एस. – 15 गणित शिक्षण विधि

कोर्स न0 : 7A
कोर्स क्रेडिट :02

सैद्धान्तिक : 40 अंक
प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- गणित शिक्षण का अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र, और उद्देश्य में अंर्तदृष्टि का विकास करना ।
- पाठ्यक्रम संरचना के सिद्धान्त का विश्लेषण।
- माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक में बी.एस.ई.बी., सी.बी.एस.ई. द्वारा निर्धारित सामग्री में क्षमता का निर्धारण।
- कक्षा में गणित की शिक्षण के विभिन्न विधियों को लागू करना और उसे समझना।
- गणित को और आसान विषय बनाने के लिए उपयुक्त तकनीक का चयम करने में सक्षम होना।
- कक्षा के छात्रों में गणित की समस्या को हल करने, पूछताछ, अपनी बातों को रखने के लिए प्रोत्साहित करने में सक्षम होना।

<u>विषय वस्तु</u>

इकाई-1 (गणित शिक्षण के लक्ष्य और उद्देश्य)

→ गणित की प्रकृति एवं अर्थ: सिद्धान्त, परिकल्पना, अभिधारणा (आधारत्त्व, अभिधारणा), संक्रियाओं आदि की भूमिका।

विद्यालयी विषय के रूप में गणित का क्षेत्र और दैनिक जीवन में संक्रिया।

गणित शिक्षण में विकासात्मक तरीका (ढर्रे)।

गणित का अन्य विद्यालयी विषयों से सह-सम्बन्ध।

गणित शिक्षण के लिये सामान्य उद्देश्यों को विकसित करना ।

शैक्षणिक एवं व्यवहारिक पदों में गणित शिक्षण को स्थापित करने की जरूरत ।

इकाई-2 (गणित पाठ्यक्रम और पाठ्य-पुस्तक)

पाठ्यक्रम का अर्थ और परिभाषा।

पाठ्यक्रम संरचना के आधार एवं सिद्धान्त।

विद्यालयीय पाठ्यक्रम में गणित का स्थान ।

गणित में पाठ्यक्रम सुधार –गणित शिक्षण के सन्दर्भ में NCF-2005, एवं BCF-2008 का सांवेदिक अनुशंसा।

माध्यमिक एवं वरिष्ठ माध्यमिक स्तरों पर गणित पाठ्यक्रम का मूल्यांकन।

गणित में पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक सामग्रियाँ।

इकाई-03 (गणित शिक्षण के लिए विधियाँ एवं पहुँच)

गणित शिक्षक की दक्षताओं एवं गुणवताएँ।

शिक्षण की विधियाँ–अधिष्ठापन, विश्लेषण-संश्लेषण अनुसंधान, प्रायोगिक, समस्या समाधान, योजना, प्रदर्शन, अभिक्रमित शिक्षण, सामूहिक शिक्षण।

गणित शिक्षण की प्रविधियाँ–मौखिक, लिखित, बहस, आलेख, अनुकरण (नकल), शिक्षण पद, कार्य विश्लेषण, प्रयोगशाला तकनीकियाँ, पर्यवेक्षक अध्ययन।

प्रयास या उपागम-परिभाषा, संरचना की अवधारणा, पर्याप्त अथवा आवश्यक स्थितियों (शर्तो) का अभिकथन, कारण सहित उदाहरण प्रस्तुत करना। तुलनात्मक एवं विषमात्मक कुछ सटीक उदाहरण प्रस्तुत करना।

अभ्यासार्थ कार्य (कोई एक) :-

1. गणित में विशिष्ट, अधिगम काठिनाइयों की पहचान।
2. माध्यमिक या वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर किसी एक बोर्ड के किसी एक कक्षा के पाठ्चर्या के विषयवस्तु का विश्लेषण।
3. माध्यमिक या वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर किसी एक परिषद के किसी एक कोटी (श्रेणी) के गणित के पाठ्य पुस्तक का मूल्यांकन।
4. किसी एक बोर्ड के माध्यमिक या वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के किसी एक कक्षा के गणित के पाठ्यक्रम की संरचना की तैयारी करना।
5. गणित के किसी इकाई के लिए अभिक्रमित अनुदेशन तैयार करना।

पी.एस.एस.-16 संगणक विज्ञान शिक्षण विधि

कोर्स न0 : 7A — सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट :02 — प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- संगणक विज्ञान के प्रकृति, क्षेत्र और महत्व की जानकारी हो जायेगी।
- पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्तों को जान जायेंगे।
- वैश्वीकरण के युग में संगणक के महत्व को समझ जायेंगे।
- संगणक विज्ञान के विकास के इतिहास से परिचित हो जायेंगे।
- संगणक विज्ञान शिक्षा के लिए आवश्यक कौशल का विकास करना।
- संगणक विज्ञान के लिए नवाचारी शिक्षण विधियों को जान जायेंगे।

इकाई - 1 (संगणक विज्ञान शिक्षण की प्रकृति, क्षेत्र एवं उद्देश्य)

- अर्थ एवं संकल्पना।
- प्रकृति एवं क्षेत्र।
- संगणक विज्ञान की उपयोगिता।
- संगणक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य।
- लक्ष्य और उद्देश्य के बीच अन्तर।
- शैक्षणिक उद्देश्य।
- व्यवहारिक संदर्भ में वर्गीकरण और लेखन शिक्षण का उद्देश्य ।

इकाई-02 (संगणक विज्ञान का विकास तथा इसका पाठ्यक्रम)

- संगणक में पहला कदम या संगणक का अस्तित्व ।
- भारत में संगणक का इतिहास।
- भारत में संगणक के महत्व और सीमाएँ।
- पाठ्यक्रम (अर्थ एवं संकल्पना)
- पाठ्यक्रम रचना का सिद्धान्त।

- संगणक विज्ञान के पाठ्यक्रम का विकास।
- वैश्वीकरण के युग में विद्यालय पाठ्यक्रम में संगणक का स्थान।

इकाई-03 (संगणक विज्ञान में शिक्षण विधि एवं शिक्षण व्युहरचना)

- व्याख्यान विधि।
- प्रदर्शन विधि।
- प्रयोगात्मक विधि।
- ह्यूरिस्टिक विधि।
- परियोजना विधि।
- आबंटन विधि।
- समस्या समाधान विधि।
- संगणक सहायता निर्देश।

अभ्यासार्थ कार्य (कोई एक):-

संगणक विज्ञान के लिए पाठ्यक्रम रचना का विकास, किसी भी श्रेणी के अनुसार

संगणक सहायता निर्देश की तैयारी

पावरप्वांइट का प्रस्तुतीकरण किसी विषय पर

संगणक द्वारा शिक्षक सामग्री की तैयारी ।

पी.एस.एस.-01 अंग्रजी शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B
कोर्स क्रेडिट :02

सैद्धान्तिक : 40 अंक
प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- कक्षा कक्ष में प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण सहायक सामग्रीयों को सफलतापूर्वक उपयोग करने की क्षमता विकसित करना।
- अंग्रेजी विषय के शिक्षक के रूप में बहुभाषी छात्रों के भाषा कौशल का विकास करना।
- कविता कहानी और अंग्रेजी व्याकरण के बीच संतुलन स्थापित करते हुए पाठ्य-योजना का शिक्षण करना।
- अंग्रजी विषय को पढ़ाने के निर्देशात्मक रणनीति को प्रतियोगिताओं के संदर्भ में विकसित करना।
- विभिन्न प्रकार के उपकरणों तकनीकी एवं मूल्यांकन करने की क्षमता का विकास करना।

इकाई-1 (शिक्षण के लिए पाठ योजना)

पाठयोजना का अर्थ एवं महत्व, पाठ योजना का चरण -B.S. ब्लूमस मॉडल।

शिक्षण के कौशल: मुख्य कौशल और सूक्ष्म पाठ योजना।

गद्य शिक्षण: गद्य पाठ योजना में वृहद कदम।

कविता शिक्षण: कविता पाठों के उद्देश्य, कविता पाठ योजना में वृहद कदम।

व्याकरण शिक्षण, अंग्रेजी शिक्षण में व्याकरण शिक्षण का स्थान व्याकरण शिक्षण और इसके योजना की विधियाँ।

इकाई-2 (शिक्षण की सहायक सामग्रियाँ)

- शिक्षण सहायक सामग्रियों के अर्थ एवं महत्व।
- साधारण शिक्षण सहायक सामग्रियाँ : श्यामपट्, चित्र, प्रतिमान चार्ट, मॉडल, नक्सा, फ्लैश कार्ड, अधीनस्थवस्तुएँ आदि।
- तकनीकी सहायक सामग्रियाँ-रेडियो, टेपरिकार्डर, टेलीविजन विडियो, O H P, एल सी डी, बहुभाषायी भाषा आदि ।
- भाषा अधिगम में कम्प्यूटर का सहयोग
- भाषा प्रयोगशाला और अंग्रेजी शिक्षण के महत्व।

- अंग्रेजी के सहायक शिक्षण इसका सामग्रियों में नवीनताएँ।
- अंग्रेजी पुस्तकालय; अंग्रेजी कक्षा कक्ष।

इकाई-3 (मूल्यांकन की प्रविधियाँ)

- मूल्यांकन प्रविधियाँ:-मूल्यांकन के प्रकार एवं अवधारणा।
- एक अच्छे परीक्षा के लक्षण।
- अंग्रेजी की परीक्षा में उपलब्धि परीक्षण हेतु रूपरेखा।
- परीक्षण या जाँच के प्रकार- वाचन, लेखन, भाषण, व्याकरण एवं शब्दावली ।
- एक अंगेजी शिक्षक की गुणवत्ता एवं उनके मूल्यांकन का दृष्टिकोण।

व्यावहारिक कार्य (कोई एक)

- अंग्रेजी शिक्षण हेतु सहायक सामग्रियों के संग्रह का विकास करना।
- एक अंग्रेजी शिक्षक के कार्यविधियों के लिए बच्चों के विशिष्ट आवश्यकता हेतु उनके अंग्रेजी विकास हेतु किन्हीं दो कार्यकलापों को बच्चों के दृष्टिकोण से तैयार करना।
- उपलब्धि परीक्षण का निर्माण।
- अंग्रेजी भाषा का सही ढ़ंग से उच्चारण तथा प्रयोगशाला में अभ्यास करना।

पी.एस.एस.-02 हिन्दी शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B **सैद्धान्तिक : 40 अंक**

कोर्स क्रेडिट :02 बी.एड. द्वितीय वर्ष- **प्रायोगिक : 10 अंक**

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- कक्षा कक्ष में प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण सहायक सामग्रियों को सफलतापूर्वक उपयोग करने की क्षमता विकसित करना।
- हिन्दी विषय के शिक्षक के रूप में बहुभाषी कौशलों का छात्रों में अन्तर्दृष्टि का विकास करना।
- कविता, कहानी और हिन्दी व्याकरण के बीच संतुलन स्थापित करते हुए पाठ्य-योजना का शिक्षण करना।
- हिन्दी विषय को पढ़ाने के निर्देशात्मक रणनीति को प्रतियोगिताओं के संदर्भ में विकसित करना ।
- विभिन्न प्रकार के उपकरणों, तकनीकी एवं मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना ।

इकाई-01 (शिक्षण के लिए योजना)

हिन्दी का मातृभाषा तथा राष्ट्रीय भाषा के रूप में विशेष सन्दर्भ में भाषा का सामान्य सिद्धान्त।

पाठयोजना का अर्थ एवं महत्व, पाठ योजना के चरण-बी.एस. ब्लूम प्रतिमान।

शिक्षण के कौशल: सार कौशल और सूक्ष्म पाठ-योजना के विकास के लिए योजना।

भाषा का आधारभूत कौशल।

बहुभाषायी कक्षा में हिन्दी शिक्षण की विधियाँ।

इकाई-02 (शिक्षण की सहायक सामग्रियाँ)

शिक्षण सहायक सामग्रियों का अर्थ और महत्व

साधारण शिक्षण सहायक सामग्रियाँ: श्यामपट, चित्र, चार्ट और मानचित्र, प्रतिमान, फ्लैश कार्ड, कठपुतली, चुम्बकीय पट आदि।

तकनीकी सहायक सामग्री : रेडियो, टेप रिकार्डर, दूरदर्शन, दृश्य साधन, प्रक्षेचित्र (OHP) LCD प्रेक्षेपित, ग्रामोफोन, बहुभाषायी-फोन।

हिन्दी भाषा सीखने में कंप्युटर की सहायता ।

हिन्दी भाषा शिक्षण में भाषा प्रयोगशाला और उसका महत्व ।

हिन्दी पाठ्य-पुस्तक की मुख्य विशेषताएँ।

इकाई-03 (मूल्यांकन प्रविधियाँ) :

मूल्यांकन की अवधारणा एवं प्रकार ।

अच्छे परीक्षण की विशेषताएँ।

निबन्धात्मक लघुत्तरीय और वस्तुनिष्ठ प्रकार के उपलब्धि परीक्षण को संरचना।

शब्दावली, व्याकरण, वाचन, लेखन और पठन के परीक्षण के प्रकार।

हिन्दी शिक्षक की गुणवत्ता-एक मूल्यात्मक प्रयास

अभ्यासार्थ कार्य-(कोई एक)

1. हिन्दी शिक्षण के लिए सहायक सामग्रियों के चित्रावली को विकसित करना।
2. छात्रों के आवश्यकता की दृष्टिकोण से हिन्दी शिक्षक के लिए किन्हीं दो क्रियाओं को तैयार करना।
3. उपलब्धि परीक्षण की संरचना।
4. इकाई योजना की तैयारी।
5. हिन्दी शिक्षण से सम्बन्धित किसी प्रकरण पर प्रदत्त कार्य

पी.एस.एस.-03 संस्कृत शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B | सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट :02 बी.एड. द्वितीय वर्ष | प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- कक्षा कक्ष में प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण सहायक सामग्रीयों को सफलतापूर्वक उपयोग करने की क्षमता विकसित करना।
- संस्कृत विषय के शिक्षक के रूप में बहुभाषी छात्रों के भाषा कौशल का विकास करना।
- कविता, कहानी और संस्कृत व्याकरण के बीच संतुलन स्थापित करते हुए पाठ्य-योजनां का शिक्षण करना।
- संस्कृत विषय को पढ़ाने के निर्देशात्मक रणनीति को प्रतियोगिताओं के संदर्भ में विकसित करना ।
- विभिन्न प्रकार के उपकरणों और तकनीकी की रचना एवं मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना ।

इकाई-01 (शिक्षण के लिए योजना)

संस्कृत शिक्षण के लिए अनुवाद विधि, और इसके लाभ एवं सीमाएँ।

संस्कृत शिक्षण की प्रत्यक्ष विधि, इसकी प्रविधियाँ एवं मुख्य-सिद्धान्त।

अन्यविधियाँ:- परम्परागत विधि, पाठ्यपुस्तक विधि, चयन विधि, संप्रेषण प्रयास, आगमनात्मक एवं निगमनात्मक विधि।

पाठ-योजना का अर्थ एवं महत्व - पाठ-योजना के चरण -बी.एस.ब्लूम प्रतिमान।

शिक्षण के कौशल; सार कौशल और सूक्ष्म पाठ योजना के विकास के लिए योजना बनाना।

भाषा के आधारभूत कौशल।

इकाई-02 (शिक्षण के लिए सहायक सामग्रियाँ)

शिक्षण सहायक सामग्रियों का अर्थ एवं महत्व।

साधारण शिक्षण सहायक सामग्रियाँ: श्यामपट्ट, चित्र, चार्ट एवं मानचित्र, प्रतिमान, फ्लैश कार्ड, कठपुतली चुम्बकीय पटल आदि।

तकनीकी सहायक सामग्रियाँ: (श्रव्य दृश्य सहायक सामग्रियाँ) रेडियो, टेप-रिकार्डर, दूरदर्शन, वीडियो, प्रक्षेपित (O.H.P) ग्रामोफोन और बहुभाषीय फोन ।

भाषा सीखने में संगणक का सहयोग।

भाषा प्रयोगशाला और इसका संस्कृत शिक्षण में महत्व

इकाई-03 (मूल्यांकन प्रविधियाँ)

मूल्यांकन की अवधारणा और प्रकार ।

अच्छे परीक्षण के अभिलक्षण।

निबन्धात्मक, लघुत्तरीय तथा वस्तुनिष्ठ प्रकार के परीक्षण की संरचना।

व्याकरण, शब्दावली, वाचन, लेखन, एवं पठन के परीक्षण के प्रकार।

संस्कृत शिक्षण के गुण-एक मल्यांकन दृष्टिकोण।

अभ्यासार्थ कार्य (कोई एक)

1. संस्कृत शिक्षण के लिए शिक्षण सहायक सामग्रियों की चित्रावली विकसित करें।
2. छात्रों की दृष्टि से विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए संस्कृत शिक्षक के लिए दो गतिविधियों को तैयार करें।
3. उपलब्धि परीक्षण की संरचना।
4. इकाई योजना की तैयारी ।
5. संस्कृत शिक्षण से सम्बन्धित किसी प्रकरण पर दत्तकार्य ।

पी.एस.एस.-04 उर्दू शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B

कोर्स क्रेडिट :02

सैद्धान्तिक : 40 अंक

प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- कक्षा कक्ष में प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण सहायक सामग्रीयों को सफलतापूर्वक उपयोग करने की क्षमता विकसित करना।
- उर्दू विषय के शिक्षक के रूप में बहुभाषी छात्रों के भाषा कौशल का विकास करना।
- कविता, कहानी और उर्दू व्याकरण के बीच संतुलन स्थापित करते हुए पाठ्य-योजना का शिक्षण करना।
- उर्दू विषय को पढ़ाने के निर्देशात्मक रणनीति को प्रतियोगिताओं के संदर्भ में विकसित करना ।
- विभिन्न प्रकार के उपकरणों तकनीकी एवं मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना।

इकाई-01 (शिक्षण के लिए योजना)

मातृभाषा के विशेष संदर्भ में उर्दू भाषा शिक्षण के व्यापक सिद्धान्त।

पाठ योजना का अर्थ एंव महत्व - पाठ योजना के चरण-B.S ब्लूम-प्रतिमान।

शिक्षण के कौशल: सार कौशल और सूक्ष्म पाठों की विकास के लिए योजना बनाना।

भाषा-आधारित कौशल।

गैर उर्दू भाषी लोगों के लिए उर्दू शिक्षण की विधियाँ।

इकाई-02 (शिक्षण सहायक सामग्रियाँ)

शिक्षण सहायक सामग्रियों का अर्थ एवं महत्व।

सामान्य शिक्षण सहायक सामग्रियाँ-श्यामपट, चित्र, चार्ट और मानचित्र, प्रतिमान, फ्लैश कार्ड, कठपुतली चुम्बकीय पटल आदि।

तकनीकी सहायक सामग्रियाँ:-रेडियो, टेप रिकॉर्डर, दूरदर्शन, वीडियो, प्रक्षेपित (O.H.P) LCD प्रक्षेपित्र, ग्रामोफोन और बहुभाषायी दूरभाष।

उर्दू भाषा सीखने में संगणक की सहायता।

भाषा प्रयोगशाला और उर्दू भाषा शिक्षण में इसके महत्त्व।

उर्दू में अच्छी पाठ्य पुस्तक की मुख्य विशेषताएँ।

उर्दू में सहगामी पाठ्य क्रियाएँ: खुशनवेशी, मुशायरा, कवि सम्मेलन, बज्म-ए-अदब, मोबाहिसा, अदबी-नुमाइश, अदबी मक्वाले, मोजाल्लाह वा मोरक्का।

इकाई-03 (मूल्यांकन प्रविधियाँ)

मूल्यांकन की अवधारणा और प्रकार।

अच्छे परीक्षण की विशेषताएँ।

निबन्धात्मक, लघुत्तरीय और वस्तुनिष्ठात्मक प्रकार के उर्दू में उपलब्धि परीक्षण की संरचना।

शब्दावली, व्याकरण, वाचन, लेखन, और पठन के परीक्षण के तरीके।

एक उर्दू शिक्षक के गुण-एक मूल्यांकन दृष्टिकोण।

पी.एस.एस.-05 अरेबिक (अरबी भाषा) शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B — सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट :02 — प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- कक्षा कक्ष में प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण सहायक सामग्रियों को सफलतापूर्वक उपयोग करने की क्षमता विकसित करना।
- अरबी विषय के शिक्षक के रूप में बहुभाषी छात्रों के भाषा कौशल का विकास करना।
- कविता, कहानी और अरबी व्याकरण के बीच संतुलन स्थापित करते हुए पाठ्य-योजना का शिक्षण करना।
- अरबी विषय को पढ़ाने के निर्देशात्मक रणनीति को प्रतियोगिताओं के संदर्भ में विकसित करना ।
- विभिन्न प्रकार के उपकरणों तकनीकी एवं मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना ।

इकाई-01 (पाठयोजना निर्माण एवं शिक्षणविधियाँ)

अरेबिक के विशेष सन्दर्भ में भाषा अधिगम एवं व्यापक सिद्धान्त।

पाठ योजना निर्माण का अर्थ एवं महत्व, पाठ योजना के चरण-बी.एस.ब्लूम प्रतिमान।

शिक्षण के कौशल: सारकौशल और सूक्ष्म पाठों का निर्माण एवं विकास।

भाषा आधारित कौशल

अरेबिक शिक्षण के लिए अनुवाद विधि, इसके लाभ एवं सीमाएँ।

अरबी शिक्षण की प्रत्यक्ष विधि, इसके मुख्य सिद्धान्त और प्रविधियाँ।

अनुवाद विधि और प्रत्यक्ष विधि की तुलना

इकाई-02 (शिक्षण के लिए सहायक सामग्री)

शिक्षक सहायक सामग्रियों का अर्थ एवं महत्व

★ सामान्य शिक्षण सामग्रियाँ: श्यामपट, चित्र, चार्ट, मानचित्र, प्रतिमान फ्लैश कार्ड, अधीनस्थ वस्तुएँ, चुम्बकीय पटल आदि।

- तकनीकी सहायक सामग्रियाँ रेडियो, टपेरिकार्डर, दूरदर्शन, दृश्य, OHP, एल सी डी, ग्रामोफोन, बहुभाषायी फोन ।
- संगणक सहयोगी भाषा अधिगम।

- भाषा प्रयोगशाला और अरबी भाषा के शिक्षण में इसका महत्व।
- अरबी में अच्छी पाठ्य पुस्तकें, अच्छी पाठ्यपुस्तकों की विशेषताएँ।
- विभिन्न परिषदों की किताबों में वर्णित तथ्यों से तुलनात्मक विश्लेषण।
- अरबी में सहगामी पाठ्यक्रियाएँ, मंहत्वपूर्ण लेखन, मुसविकाह अल अवियात मुताहि सेतुन, सिराह।

इकाई-3 (मूल्यांकन प्रविधियाँ)

- मूल्यांकन के प्रकार एवं अवधारणा:
- सतत समग्र मूल्यांकन की अवधारणा एवं घटक
- अच्छे परीक्षण के अभिलक्षण ।
- निबंधात्मक; लघुत्तरीय और वस्तुनिष्ठात्मक, परीक्षणों का अरबी में उपलब्धि परीक्षण हेतु संरचना।
- लेखन, वाचन, व्याकरण और शब्दावलियों, पठन के परीक्षण के तरीके।
- अरबी शिक्षक के गुण; एक मूल्यात्मक प्रयास

व्यावहारिक कार्य : (कोई एक) (पाठ की आवश्यकता के अनुसार सम्बन्धित शिक्षक परीक्षण का विकास कर सकते हैं)

- अरबी शिक्षण के सहायक सामग्री हेतु एक चित्रावली विकसित करें।
- छात्रों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अरबी शिक्षक के लिए विशेष रूप से किन्हीं दो क्रियाकलाप की तैयारी करना।
- उपलब्धि परीक्षण की संरचना
- इकाई योजना की तैयारी या निर्माण
- अरबी शिक्षण से संबंधित किसी प्रकरण पर दत्त कार्य।

पी.एस.एस.-06 पारसी (पारसियन) शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B	सैद्धान्तिक : 40 अंक
कोर्स क्रेडिट :02	प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- कक्षा कक्ष में प्रभावकारी निर्देशन देने के लिए प्रभावकारी शिक्षण सहायक सामग्रियों का विकास ।
- पारसी शिक्षक के आंतरिक विकास के रूप में बच्चों में बहुभाषायी कौशलों का विकास।
- कविता, कहानी और व्याकरण शिक्षण में संतुलन के साथ पाठ योजना ।
- पारसी शिक्षण में प्रभावकारी निर्देशात्मक नीतियों को प्रतियोगिताओं के संदर्भ में विकसित करना ।
- विभिन्न प्रकार के उपकरणों, तकनीकी एवं मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना।

इकाई-01 (पाठयोजना निर्माण एवं शिक्षणविधियाँ)

भाषा अधिगम के व्यापक सिद्धान्त विशेष रूप से पारसी के सन्दर्भ में ।

पाठ निर्माण का अर्थ और महत्त्व, पाठ योजना के चरण-B.S. ब्लूम प्रतिमान।

शिक्षण के कौशल: सार कौशल और विकास के लिए सूक्ष्म पाठों का निर्माण।

भाषा अधिगम के आधार भूत कौशल।

पारसी शिक्षण के लिए अनुवाद विधि, इसके लाभ व सीमाएँ।

पारसी शिक्षण की प्रत्यक्ष विधि, इसके प्रमुख सिद्धान्त व प्रविधियाँ।

अनुवाद विधि व प्रत्यक्ष विधि की तुलना ।

इकाई-02 (शिक्षण की सहायक सामग्रियाँ)

सहायक शिक्षण सामग्रियों के अर्थ एवं महत्व।

सामान्य शिक्षण सामग्रियाँ, श्यामपट, चित्र, चार्ट और मानचित्र, प्रतिमान, फ्लैशकार्ड, पराधारित वस्तुएँ आदि।

तकनीक सहायक सामग्रियाँ; रेडियो, अभिलेखन, दूर दर्शन, वीडियो, प्रक्षेपित (OHP), LED प्रक्षेपित, ग्रामोफोन और बहु-भाषायी भाष।

संगणक सहयोगी भाषा अधिगम ।

भाषा प्रयोगशाला और पारसी शिक्षण में इसका महत्व ।

पारसी के अच्छी पाठ्य पुस्तकों के विशेषताएँ।

पारसी में सहगामी क्रिया-कलाप, उदात्त लेखन कवि सम्मेलन, मुशायरा आदि।

इकाई-03 (मूल्यांकन-प्रविधियाँ)

मूल्यांकन की अवधारणा एवं प्रकार ।

सतत् समग्र मूल्यांकन (CCE) के घटक एवं अवयव।

अच्छे परीक्षण की विशेषताएँ।

निबन्धात्मक, लघुत्तरीय और वस्तुनिष्ठता प्रकार के पारसी में उपलब्धि परीक्षण की संरचना।

पठन, लेखन, वाचन, व्याकरण और शब्दावली के परीक्षण के तरीके।

एक आदर्श पारसी शिक्षक के गुण-एक मूल्यात्मक प्रयास ।

अभ्यासार्थ कार्य (कोई एक)

पारसी शिक्षण के लिए सहायक सामग्रियों को चित्रावली विकसित करो।

छात्रों की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए विशेष आवश्यकता हेतु एक पारसी शिक्षक के लिए दो क्रिया-कलापों को तैयार करें ।

उपलब्धि परीक्षण की संरचना।

पारसी शिक्षण से सम्बन्धित किसी प्रकरण पर दत्तकार्य।

पी.एस.एस.-07 इतिहास शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B **सैद्धान्तिक : 40 अंक**
कोर्स क्रेडिट :02 **प्रायोगिक : 10 अंक**

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- कक्षा में प्रभावी निर्देश प्रदान के लिए प्रभावी शिक्षण सहायक सामग्री का विकास करना ।
- राष्ट्रीय एकता के लिए इतिहास के शिक्षक की भूमिका के बारे में एक अंतर्दृष्टि विकसित करने के लिए।
- इतिहास के शिक्षण से संबंधित मुद्दों पर प्रतिबिंब बढ़ावा देने के लिए ।
- इतिहास पढ़ाने के लिए प्रभावी शिक्षण में रणनीतियों को डिजाइन करने में क्षमता विकसित करने के लिए।
- डिजाइन विकास और उपयोग करने के लिए विभिन्न उपकरणों और तकनीक और विकास करने की क्षमता विकसित करने के लिए।

इकाई-01 (इतिहास शिक्षण में सहायक सामग्री एवं गतिविधियाँ)

शिक्षण अधिगम सामग्रियाँ, सन्दर्भित सामग्रियाँ, पुरातात्विक सर्वेक्षण प्रतिवेदन, समाचार पत्र और कार्य काल आदि के बारे में बताएँ।

शिक्षण सहायक सामग्रियों का चुनाव एंव प्रयोग और श्रव्य-दृश्य, मानचित्र पोस्टर, कार्टून, लेख, पुस्तक, प्राचीन संग्रह सामुदायिक संसाधन विशेष रूप से ऐतिहासिक सन्दर्भ की भूमिका स्पष्ट करें।

सहगामी क्रिया कलापों की व्यवस्था-इतिहास क्लब (सामूहिकचर्चा) अध्ययन क्षेत्र, वार्तालाप, प्रदर्शनी, संगोष्ठी और चर्चा, अनुपयुक्त पुस्तकों की तैयारी का इतिहास संग्रहालय में चर्चा का आयोजन करना।

इतिहास शिक्षण में देशाटन और पर्यटन की भूमिका को बताएँ।

इकाई-02 (अनुदेशात्मक योजना)

शिक्षण के कौशल: सार शिक्षण कौशल और सूक्ष्म शिक्षण पाठ का निर्माण के कौशल का विकास करना।

इतिहास मे प्रभावी अनुदेशन के लिए योजना तैयार करना।

इकाई योजना: आवश्यकता और चरण (कदम)।

पाठयोजना निर्माण-प्रभावी योजना के लिए विधि।

इकाई-03 (इतिहास में मूल्यांकन)

मूल्यांकन विकास की अवधारणा एवं उद्देश्य को स्पष्ट करें।

मूल्यांकन विकास के प्रकार: रचनात्मक एवं संकल्पनात्मक, बहा्य एवं आन्तरिक, कसौटी सम्बन्धित विपक्ष एवं मानक सन्दर्भित मूल्यांकन करें।

मूल्यांकन के यंत्र (विकास के उपकरण)

अच्छे मूल्यांकन यंत्र के गुण की विवेचना करें

निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठात्मक परीक्षण-उनके गुण एवं सीमाएँ को बताएँ।

इतिहास में उपलब्धि परीक्षण की संरचना।

अभ्यासार्थ कार्य (कोई एक)

इतिहास प्रदर्शनी किसी विशेष प्रकरण पर आयोजित करना।

इतिहास शिक्षण हेतु एक चित्र संग्रह तैयार करना जो इतिहास पढ़ाने में सहायता प्राप्त हो।

किसी भी ऐतिहासिक विषय की रूप रेखा तैयार कना।

इतिहास में इकाई संसाधन पर एक प्रकरण चुनें और तैयार करें।

कक्षा नवमीं व दशम् के लिए, उपलब्धि परीक्षण की संरचना।

प्रश्नोत्तरी एवं प्रतिचित्र की प्रतियोगिता का किसी प्रकरण पर इतिहास विषय की दृष्टिकोण से आयोजित करना।

किसी ऐतिहासिक प्रकरण पर प्रतिमान तैयार करना।

पी.एस.एम.-08 नागरिक शास्त्र शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B | सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट :02 | प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- कक्षा-कक्ष में प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण सहायक सामग्रियों को सफलतापूर्वक उपयोग करने की क्षमता विकसित करना।
- नागरिक-शास्त्र शिक्षक की भूमिका के बारे में अंतःदृष्टि विकसित करना।
- नागरिक-शास्त्र शिक्षण से संबन्धित मुद्दों को बढ़ावा देने के लिए चिंतन विकसित करना।
- नागरिक-शास्त्र शिक्षण को प्रभावी ढ़ंग से पढ़ाने की रणनीति एवं क्षमता विकसित करना।
- विभिन्न प्रकार के उपकरणें, तकनीकी एवं मूल्यांकन का उपयोग करते हुए रूप-रेखा का विकास करना।

इकाई-01 (नागरिकशास्त्र शिक्षण हेतु सहायक सामग्रियाँ एवं क्रियाकलाप)

- सहायक सामग्रियों का महत्व, विभिन्न प्रकार की सहायक सामग्रियाँ एवं क्रियाकलाप।
- प्रभावी शिक्षण हेतु नागरिकशास्त्र के शिक्षक के लिए सहायक शिक्षण सामग्रियों की भूमिका।
- नागरिकशास्त्र शिक्षण में पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों की भूमिका ।
- पाठ्य सहगामी क्रिया कलापों का आयोजन; वाद विवाद, संगोष्ठी सम्मेलन, या उचित चर्चाएँ, शब्द संग्रह नागरिकशास्त्र सामूहिक चर्चा।
- सामूहिक संसाधनों के विकास हेतु निम्नस्तरीय मूल्य के सहायक सामग्रियों का प्रयोग।

इकाई-02 (अनुदेशनात्मक योजना)

- शिक्षण कौशल; मुख्य शिक्षण कौशल और सूक्ष्म शिक्षण पाठों के विकास हेतु कौशलों का निर्माण करना।
- नागरिकशास्त्र में प्रभावी अनुदेशन के लिए पाठयोजना बनाना।

- इकाई पाठयोजना निर्माण आवश्यकता एवं चरण।
- पाठ योजना निर्माण; प्रभावी पाठयोजना बनाने की विधि।

इकाई-03 (नागरिकशास्त्र एवं उद्देश्य)

- मूल्यांकन की आवधारणा एवं उद्देश्य।
- मूल्यांकन के प्रकार :- रचनात्मक बनाम संगठनात्मक।
- बाह्य बनाम आंतरिक, कसौटी संदर्भित बनाम मानक संदर्भित मूल्यांकन।
- मूल्यांकन के तरीके।
- अच्छे मूल्यांकन उपकरण की गुणवत्ताएँ।
- निबंधात्मक एवं वस्तुनिष्ठात्मक प्रकार के परीक्षण सीमाएँ, इनके गुण एवं सीमाएँ।
- नागरिकशास्त्र में उपलब्धि परीक्षण की संरचना।

व्यावहारिक कार्य (कोई एक)

- नागरिकशास्त्र शिक्षण में संबंधित विशेष प्रकरण पर एक प्रदर्शनी का आयोजन करना।
- नागरिक शास्त्र शिक्षण के लिए एक सहयोगी चित्र संग्रह की तैयारी करना।
- किसी राजनीतिक प्रकरण पर प्रश्नावली/प्रतिचित्र की प्रतियोगिता की तैयारी करना।

पी.एस.एस.-09 भूगोल शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B
कोर्स क्रेडिट :02

सैद्धान्तिक : 40 अंक
प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- कक्षा-कक्ष में प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण सहायक समाग्रियों को सफलतापूर्वक उपयोग करने की क्षमता विकसित करना।
- भूगोल शिक्षक की भूमिका के बारे में अंतःदृष्टि विकसित करना।
- भूगोल शिक्षण से संबन्धित मुद्दों को बढ़ावा देने के लिए चिंतन विकसित करना।
- भूगोल शिक्षण को प्रभावी ढ़ंग से पढ़ाने की रणनीति एवं क्षमता विकसित करना।
- विभिन्न प्रकार के उपकरणों, तकनीकी एवं मूल्यांकन का उपयोग करते हुए, रूप-रेखा कों विकास करना।

इकाई-01 (शिक्षण सहायक सामग्री और पाठ्य सहगामी क्रियाएँ)

- भूगोल शिक्षक के गुण और आवश्यकता।
- सहायक शिक्षण सामग्रियाँ।
- जन संचार माध्यम
- भूगोल कक्ष, प्रयोगशाला, भूगोल संग्रहालय-महत्व, बनावट, सजावट और देखभाल।
- क्षेत्र भ्रमण, सामूहिक यात्रा, देशाटनके संगठन का महत्व ।
- भूगोल आधारित आकांक्षा, क्लब इत्यादि।

इकाई-02 (अनुदेशानात्मक योजना)

- इकाई योजना : अर्थ, आवश्यकता और चरण
- वर्ष भर के कार्यक्रम की तैयारी
- सूक्ष्म शिक्षण
- पाठ योजना-अर्थ, महत्व, प्रारूप, अच्छे पाठ योजना की विशेषता।
- भूगोल में व्यवहारिक कार्य की योजना।

इकाई-03 (भूगोल में मूल्यांकन)

- भूगोल मूल्यांकन के उद्देश्य एवं महत्व।

- रचनात्मक और संकल्पनात्मक मूल्यांकन।
- इकाई जाँच अर्थ और महत्व।
- भूगोल में उपलिब्ध परीक्षण की तैयारी।
- भूगोल में संतुलित प्रश्न पत्र।

व्यावहारिक/अभ्यास कार्य (कोई एक)

- भूगोल शिक्षण में सहायक सामग्री के रूप में एक चित्र संग्रह तैयार करना।
- प्रतिमान की तैयारी करना।
- भूगोल में इच्छानुसार चुनी गई प्रकरण पर इकाई निर्माण में संसाधन तैयार करना।
- दसवी और नवीं कक्षा के लिए उपलब्धि परीक्षण की संरचना।
- भूगोल के किसी प्रकरण पर प्रश्नोत्तरी या विशालचित्र की प्रतियोगिता आयोजित करना।

पी.एस.एस.-10 अर्थशास्त्र शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

सैद्धान्तिक : 40 अंक
प्रायोगिक : 10 अंक

कोर्स न0 : 7B
कोर्स क्रेडिट :02

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- कक्षा-कक्ष में प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षण सहायक समाग्रियों को सफलतापूर्वक उपयोग करने की क्षमता विकसित करना।
- अर्थशास्त्र शिक्षक की भूमिका के बारे में अंत:दृष्टि विकसित करना।
- अर्थशास्त्र शिक्षण से संबन्धित मुद्दों को बढ़ावा देने के लिए चिंतन विकसित करना।
- अर्थशास्त्र शिक्षण को प्रभावी ढ़ंग से पढ़ाने की रणनीति एवं क्षमता विकसित करना।
- विभिन्न प्रकार के उपकरणों, तकनीकी एवं मूल्यांकन का उपयोग करते हुए रूप-रेखा का विकास करना।

इकाई-01 (शिक्षण सहायक सामग्री और सह पाठ्यक्रम गतिविधियाँ)

- अर्थशास्त्र शिक्षण में विभिन्न प्रकार के सहायक सामग्री का महत्व एवं उपयोगिताएँ।
- पाठ्यक्रम गतिविधियाँ में अर्थशास्त्र की भूमिका।
- अर्थशास्त्र शिक्षण में सह पाठ्यक्रम गतिविधियों का आयोजन - वाद-विवाद, संगोष्ठी, सम्मेलन, सामूहिक चर्चा और संगोष्ठी, अर्थशास्त्र समूह कथन सम्मुख पत्रिका प्रश्नोत्तरी।
- अर्थशास्त्र शिक्षक का महत्व, पठन सामग्री का उपयोग और विकसित करने की प्रक्रिया में।
- समुदाय संसाधनों की उपयोगिता।

इकाई-02 (योजना के विषय में विस्तृत निर्देश)

- इकाई योजना : अर्थ, आवश्यकता और चरण
- पढ़ाने की कला की महत्वपूर्णता
- सुक्ष्म योजनाओं का विकास
- पाठ योजना - पाठ योजना बनाने का प्रक्रिया।

इकाई-03 (अर्थशास्त्र में मूल्यांकन)

- शिक्षा मूल्यांकन की प्रकृति इसके उपयोग आवश्यकता शैक्षणिक प्रक्रिया में भूमिका
- सही ढंग से मूल्यांकन

- अर्थशास्त्र में निर्देश पूर्व ध्येय को जाँच करने का व्यवहारिक तरीका।
- योजना और तैयारी का इकाई लघु परीक्षण और उपलब्धि परीक्षण
- खुला किताब परीक्षा, मूल्यांकन, परियोजनाकार्य, प्रश्नकोष
- सुधारात्मक और परीक्षण जाँच।

व्यावहारिक कार्य (कोई एक) :-

- अर्थशास्त्र शिक्षण के लिए एक सहायता के रूप में एक एलबम की तैयारी।
- मॉडल का प्रारूप तैयार करना।
- एक संसाधन के रूप में अपनी पसंद के एक विषय अर्थशास्त्र की तैयारी।
- वर्ग IX और X का उपलब्धि परीक्षण का प्रारूप तैयार करना।
- अर्थशास्त्र के किसी भी विषय पर प्रश्नोत्तरी पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन।

पी.एस.एस.-11 गृह विज्ञान शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B | सैद्धान्तिक : 40 अंक
कोर्स क्रेडिट :02 | प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- गृह विज्ञान शिक्षण के दृष्टिकोण से विभिन्न तकनीकों को जानना और लागू करना।
- पर्याप्त संतुलन के साथ सिद्धान्त और व्यवहार को उपयोग करते हुए एक पाठ योजना विकसित करना।
- गृह विज्ञान शिक्षण संबंधित समस्या से निपटना।
- किसी भी लिंग भेदभाव के छात्रों को लिए जीवन के व्यवहारिक प्रशिक्षण देना। (शिक्षा आयोग (64-66) की सिफारिश है कि वहाँ लिंग के आधार पर पाठ्यक्रम का कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। लड़के को भी गृह विज्ञान शिक्षा की जरूरत है क्योंकि उसे भी परिवार में बराबर की जिम्मेदारी है। वह स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण, बजट, उचित कपड़े, बच्चे के पालन, घर प्रबंधन आदि के साथ समान रूप से चिंतित होते हैं। क्योंकि वह समान रूप से सहयोगी है।)
- छात्रों की उपलब्धी के मूल्यांकन के लिए प्रभावी उपकरण विकसित करना।

इकाई-1 (गृह विज्ञान शिक्षण के लिए निदेशित कार्यनीति)

- गृह विज्ञान पढ़ाने का तरीका-भाषण, आपस में बातचीत करके, विस्तार रूप से पढ़कर, परियोजनाविधि समस्या समाधान विधि, प्रयोगशाला विधि, शिक्षण दत्त कार्य, गृह अनुभव।
- शिक्षण कौशल और विकास लघु योजना द्वारा पढ़ाने की कला को विकसित करना, एक दूसरे को देख कर सीखना।
- पाठ योजना- प्रभावशाली, प्रभावोत्वादकता, पाठ योजना बनाने का सही ढंग।
- संतुलित पाठ योजना सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक दृष्टिकोण से।

इकाई-02 (गृह विज्ञान शिक्षण में समस्या)

- स्कूल में गृह विज्ञान शिक्षण में समस्या।
- लिंग भेदभाव के साथ शिक्षण।
- एक वैकल्पिक विषय के रूप में शिक्षण।
- बिना प्रायोगिक ज्ञान के शिक्षण करना।

इकाई-03 (गृह विज्ञान में मूल्यांकन)

- मूल्यांकन का उद्देश्य, कारण, और विचार।
- मूल्यांकन का प्रकार।
- मूल्यांकन का आधार/औजार।
- अच्छी मूल्यांकन की विशेषताएँ।
- निबन्धात्कम एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षण।
- उपलब्धि परीक्षण की संरचना एवं तैयारी।
- विद्यार्थी के मूल्यांकन के लिए व्यावहारिक जानकारी।

व्यावहारिक कार्य (कोई एक) :-

- वर्ग नौवीं एवं दशवीं का पाठ योजना तैयार करना ।
- किसी भी विषय के एक कार्यक्रम निर्देशन तैयार करना ।
- माध्यामिक कक्षाओं के लिए एक उपलब्धि परीक्षण का विकास करना।
- गृह विज्ञान शिक्षण की समस्याओं से सम्बन्धित एक काम करना।
- प्राथमिक चिकित्सा, प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स की व्यवस्था करना ।

पी.एस.एस.-12 वाणिज्य शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B

कोर्स क्रेडिट :02

सैद्धान्तिक : 40 अंक

प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- पाठ योजना के अनुसार शिक्षण सहायक सामग्री के महत्व को तैयार कर सकते हैं।
- प्रभावशील वाणिज्य शिक्षण में महारत हासिल करने का कौशल विकसित करना ।
- सामग्री का चयन और व्यवस्थित करना, शिक्षा योजना के लिए प्रभावी वितरण।
- वाणिज्य शिक्षण के क्षेत्र में उपलब्धि परीक्षण का विकास।
- वाणिज्य शिक्षण के क्षेत्र में उचित मूल्यांकन तकनीक के प्रभाव को समझना।

इकाई-01 (निदेशित सामग्री, पठन सामग्री और सहायक विषय वस्तु का क्रियान्वन)

- वाणिज्य शिक्षण में सहगामी सामग्री का उपाय, महत्व और उपयोग।
- वाणिज्य में पठन सामग्री और उपकरणों का चुनाव करने का मापदंड
- वाणिज्य शिक्षा में विभिन्न दृश्य, श्रवा साधन और सामग्री का इस्तेमाल।
- वाणिज्य शिक्षा में हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का उपयोग।
- प्रायोगिक कार्य वाणिज्य में।

इकाई-02 (वाणिज्य पढ़ाने के लिए तैयारी)

- इकाई और पाठ्य योजना।
- लघु योजना द्वारा मुख्य शिक्षण कौशल का विकास।
- पाठ्य-योजना प्रक्रिया : विषय का चयन और उसका संगठन, वाणिज्य में योजना बनानें का निर्देश, शैक्षणिक और व्यवहारिक उद्देश्य, सहायक सामग्री को तैयार करना ओर उसका उपयोग, छात्रों की प्रतिक्रिया का प्रबंधन।
- वाणिज्य में कार्य एक साल बही-खाता एवं बजट की तैयारी करना।

इकाई-03 (वाणिज्य में मूल्यांकन)

- मूल्यांकन की अवधारणा।
- मापन और परीक्षण।

- लघु परीक्षा का प्रकार।
- वाणिज्य में विकास का विभिन्न प्रकार का जाँच परीक्षण।
- सुधारात्मक पढ़ाई
- सफल परीक्षा और टेस्ट विषय की तैयारी।

व्यवहारिक कार्य (कोई एक) :-

- सहायक सामग्री की मदद से प्रभावी शिक्षण का प्रारूप तैयार करना।
- समुदाय संसाधन का उपयोग कर एक स्कूल बजट तैयार करना।
- वाणिज्य शिक्षण में सहायक चार्ट और मॉडल का निर्माण करना।
- भावी शिक्षकों और अनुभवी शिक्षकों द्वारा सबक का अवलोकन सिखना।
- वर्ग नौवीं एवं दशवीं की उपलब्धि परीक्षण का प्रारूप तैयार करना।

पी.एस.एस.-13 भौतिक विज्ञान शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B — सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट :02 — प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

★ पाठन सामग्री के महत्व को समझना और इनको पाठ योजना के अनुसार तैयार करना।

★ प्रभावी भौतिक विज्ञान को पढ़ाने और इसकी क्षमता के एकाधिकार को आगे बढ़ाना।

★ विषय वस्तु को चुनना और संगठित करना, निर्देशों की योजना बनाना और प्रभावी ढंग से प्रस्तुतीकरण।

★ भौतिक विज्ञान के प्रयोगशाला को विकसित करना।

★ भौतिक विज्ञान के मूल्यांकन के जाँच को विकसित करना।

विषय वस्तु

इकाई-01 (पाठ्य सामग्री और भौतिक विज्ञान की क्रियाकलाप)

★ भौतिक विज्ञान में पाठ्य सामग्री सुनकर, देखकर, दृश्य-श्रव्य, स्थिर गति, द्विआयामी, त्रिआयामी।

★ तत्काल शिक्षण सहायक सामग्री की तैयारी। →

★ भौतिक विज्ञान प्रयोशाला - आवश्यक और महत्वपूर्ण सामग्रियों का व्यवस्था

★ भौतिक विज्ञान के शिक्षण में सामुदायिक स्त्रोतों का उपयोग

★ भौतिक विज्ञान के पाठ्य में अनौपचारिक पहुँच। विज्ञानसभा, क्षेत्रयात्रा, विज्ञान मेला, विज्ञान प्रतियोगिता।

इकाई-02 (भौतिक विज्ञान में निर्देशात्मक कार्यनिति)

★ इकाई योजना और पाठ योजना।

★ सूक्ष्म योजना के द्वारा पढ़ाने की क्षमता के महत्व को बढ़ाना।

★ पाठ योजना के प्रक्रिया का चुनाव और विषय वस्तु का संगठन, भौतिक विज्ञान में योजनाओं का निर्देशन, निर्देशात्मक और व्यावहारिक वस्तुओं की स्थिति, भौतिक विज्ञान में पाठय सामग्री की तैयारी और उपयोग, विद्यार्थी के प्रतिक्रिया को संतुलित करना।

इकाई-03 (भौतिक विज्ञान में मूल्यांकन)

★ मूल्यांकन का उद्देश्य और अर्थ

★ मूल्यांकन के प्रकार। -रचनात्मक, लिखित, बाहरी, अन्दुरूनी, मापदण्ड संबंध, मानक संबंध

* औजार का मूल्यांकन
* अच्छे मापक यंत्रों के गुण
* आसान और वैकल्पिक प्रकार के जाँच
* शिक्षकों द्वारा बनाया गया मानकीकृत जाँच
* उपलब्धि जाँच की बनावट और योजना बनाना।

व्यावहारिक कार्य (कोई एक) :-

* एक दैनिक पाठ योजना तैयार करना जिसमें भौतिक विज्ञान के प्रधानता और नियमों का विस्तार/भौतिक विज्ञान का प्रदर्शन/अंकीय समस्याएँ।
* एक आदर्श भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला की रूप-रेखा तैयार करना या किसी एक बिन्दु पर भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला को चलाने के लिए एक पाठ योजना तैयार करना।
* विद्यालय के भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला का निरीक्षण।
* सुनने और देखने की सामग्री का प्रयोग करके ग्राफ की सहायता से एक नमुना तैयार करना।
* संभावित शिक्षक और अनुभवी शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए पाठों का निरीक्षण।
* नवमी और दसवीं वर्ग के लिए उपलब्धि जाँच की बनावट।

पी.एस.एस.-14 जीव विज्ञान शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट :02 प्रायोगिक : 10 अंक

<u>पाठ्यक्रम उद्देश्य :</u>

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

★ जीव विज्ञान के प्रभावी शिक्षण के लिए खस रणनीतीयों को अपनाने में।

★ जीव विज्ञान शिक्षण की कठिनाईयों की विशिष्ट पहचान करने में।

★ जीव विज्ञान के प्रभावी शिक्षण के लिए महत्वपूर्ण कौशल की प्राप्ति करने में ।

★ विद्यालय के छात्रों की गहराई से जाँच कर उनको प्रोत्साहित करने के लायक बनाना, जीव विज्ञान के खास मुद्दों से संबन्धित प्रश्न करना।

★ जीव-विज्ञान में सुधार के लिए विभिन्न तरीकों एवं कौशलों का प्रयोग करना।

विषय सूची-

इकाई-01 (<u>जीव विज्ञान पढ़ाने की सामरिक महत्व का कार्य निष्पादन</u>)

★ इकाई योजना : तैयारी एवं महत्व

★ पाठ-योजना : आवश्यकता और महत्व

★ संतुष्टि संगठन और चुनाव, जीव विज्ञान में निर्देशन के अनुसार योजना

★ जीव विज्ञान में शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग एवं तैयारी छात्रों के प्रत्युत्तर को विकसित करना।

★ महत्वपूर्ण शिक्षण कौशल और सूक्ष्म पाठ योजना का विकास।

★ दिये गये प्रकरण पर वृहद अवधारण की पहचान तथा विश्लेषण।

इकाई-02 (<u>निम्न मुद्दों पर शैक्षणिक विश्लेषण</u>)

■ कोशिकांगो की रचना एवं कार्य, पौधे तथा जंतुओं में पोषण, प्रकाश संश्लेषण, जन्तुओं तथा मनष्यों में श्वसन, पौधों में परिवहन तंत्र तथा जंतुओं में रक्त परिसंचरण तंत्र, मनुष्य में उत्सर्जन तंत्र, पौधे तथा जंतुओं में प्रजनन, पौधे और पारिस्थितिक संतुलन।

■ शिक्षणशास्त्र के विषय में शामिल होना चाहिए

■ अवधारणा की पहचान

■ व्यवहारिक उत्तरों का सारणीकरण

■ मूल्यांकन क्रियाविधि का सारणीकरण।

■ क्रियाविधि और प्रयोगों का सारणीकरण।

<u>इकाई-03 (जीव विज्ञान में मूल्यांकन)</u>

★ मूल्यांकन की अवधारणा एवं उद्देश्य

★ मूल्यांकन के प्रकार - संकलनात्मक और वाह्य और आंतरिक।

★ मूल्यांकन के उपकरण

★ अच्छे मूल्यांकन उपकरण का गुण ।

★ निबंधात्मक और वस्तुनिष्ट प्रकार के परीक्षण उनके गुण एवं सीमायें, उनके बढ़ाने के उपाय।

★ जीव-विज्ञान में उपलब्धि परीक्षण की रचना।

व्यावहारिक कार्य (कोई एक) :-

■ खास संप्रत्ययों को ध्यान में रखते हुए पाठ-योजना का निर्माण जिसमें छात्रों के संक्रियात्मक स्तर की आशा की जाती हो।

■ जीव-विज्ञान के किसी प्रकरण पर सूक्ष्म शिक्षण का पाठ-योजना तैयार करें।

■ छात्राध्यापकों और अनुभवी शिक्षकों के द्वारा पढ़ाये जाने वाले पाठ का प्रेक्षण।

■ कक्षा नवम एवं दशम के लिए उपलब्धि परीक्षण की रचना।

■ अनुच्छेद लेखन, संक्षिप्त उत्तर और वस्तुनिष्ट प्रकार के जाँच पत्र का निर्माण करना।

पी.एस.एस.-15 गणित शिक्षण की विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B | सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट : 02 | प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- शिक्षण सहायक सामग्री के महत्व को समझना और इसे पाठ योजना के अनुसार तैयार करना।
- गणित विज्ञान शिक्षण में सहगामी शिक्षण कौशल का विकास।
- सामग्री को चयन और व्यवस्थित करना, शिक्षा योजना के लिए प्रभावी वितरण।
- गणित के क्षेत्र में उपलब्धि परीक्षण का विकास।
- गणित के क्षेत्र में उचित मूल्यांकन तकनीक के प्रभाव को समझना।

विषय-सूची

इकाई-01 (पढाने की क्रिया और गणित में सक्रियता)

- ★ गणित में सहायक सामग्री। श्रवण, दृश्यात्मक, श्रवण-दृश्यात्मक, स्थिरता, गति, द्विविमीय, एवं त्रिविमीय।
- ★ कम खर्च मे पाठन सामग्री में सुधार की तैयारी करना।
- ★ खेल की सहायता को गणितीय प्रयोग, प्रतियोगिता, मेला, पहेली, उलझन, वर्गात्मक जादू
- ★ नैदानिक और गणित में समृद्ध कार्यक्रम।
- ★ गणितीय प्रयोगशाला और गणितीय सभा

इकाई-02 (गणित शिक्षण की योजना)

- ★ इकाई योजना और पाठयोजना।
- ★ सूक्ष्म-योजना
- ★ पाठ-योजना प्रक्रिया चयन और सामग्री का संगठन - गणित में योजना बनाने के निर्देश प्रारंभिक निर्देशन और व्यवहारगत उद्देश्य, गणित में शिक्षण सहायक सामग्रियों का निर्माण और उपयोग को व्यवस्थित करना।

इकाई-03 (गणित में मूल्यांकन)

- ★ मूल्यांकन का उद्देश्य और अर्थ
- ★ मूल्यांकन का प्रकार-रचनात्मक, विषयवस्तु, योगात्मक, बाहरी, अन्दरूनी, कसौटी संदर्भित, आदर्श संदर्भित ।
- ★ मूल्यांकन के औजार।
- ★ अच्छे मापक औजार के गुण।

★ निबंध और वैकल्पिक आधारित जाँच शिक्षकों के द्वारा बनाया गया और मानकीकृतक परीक्षण।

★ उपलब्धि परीक्षण की योजना एवं संरचना।

व्यावहारिक कार्य (कोई एक) :-

- एक विशेष अवधारणा को ध्यान में रखकर बच्चों की उम्मीद संचालन के स्तर को बनाये रखने के लिए पाठ योजना का प्रारूप।
- आदर्श गणित प्रयोगशाला का प्रारूप तैयार करना।
- स्कूल के गणित प्रयोगशाला का सर्वेक्षण करना।
- चार्ट और मॉडल का प्रारूप तैयार करना।
- भावी शिक्षकों और अनुभवी शिक्षकों द्वारा सिखाये सबक का अवलोकन करना।
- वर्ग नवम एवं दशम के उपलब्धि परीक्षण का प्रारूप तैयार करना।

लिए

पी.एस.एस.-16 संगणक विज्ञान शिक्षण विधि (भाग द्वितीय)

कोर्स न0 : 7B — **सैद्धान्तिक : 40 अंक**

कोर्स क्रेडिट :02 — **प्रायोगिक : 10 अंक**

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- प्रभावी संगणक विज्ञान शिक्षण के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण शिक्षण कौशल से अधिक महारत हासिल कर सकेंगे।
- शिक्षा योजना के लिए व्यवस्थित सामग्री का चयन एवं प्रभावी वितरण सुनिश्चित कर सकेंगे।
- संगणक विज्ञान के क्षेत्र में उपलब्धि परीक्षण का विकास कर सकेंगे।
- संगणक विज्ञान के क्षेत्र में उचित मूल्यांकन तकनीक के अनुप्रयोग (उपयोग) को समझ सकेंगे।
- एक प्रभावी संगणक विज्ञान प्रयोगशाला स्थापित करने में सक्षम हो सकेंगे।

पाठ्यक्रम सामग्री :

इकाई-01 (पाठ योजना एवं संगणक में निर्देश)

- सूक्ष्म-योजना।
- पाठ-योजना में सम्मलित सोपान।
- संगणक विज्ञान में पाठ्य पुस्तक।
- संगणक विज्ञान का प्रभावी शिक्षक।
- संगणक विज्ञान में शिक्षण समस्या।

इकाई-02 (संगणक विज्ञान में मूल्यांकन)

- मूल्यांकन की प्रकृति एवं आवश्यकता।
- मूल्यांकन का उद्देश्य एवं प्रकार आन्तरिक-वाह्य, मानदण्ड संदर्भित-गैर संदर्भित, रचनात्मक-योगात्मक।
- संगणक के द्वारा मूल्यांकन।
- निर्माण का परीक्षण।
- मूल्यांकन के उपकरण : मापन के अच्छे उपकरणों की विशेषता।

इकाई-03 (संगणक विज्ञान प्रयोगशाला)

- आवश्यकता एवं महत्व।

- प्रयोगशाला की रूपरेखा बनाने की योजना बनाना।
- उपकरण एवं सामग्री।
- रख-रखाव और सुरक्षा के उपाय।
- संगणक विज्ञान शिक्षण में अभ्यास कार्य।
- इंटरनेट एवं शिक्षा में इंटरनेट।

व्यावहारिक कार्य (कोई एक) (विषय से संबन्धित आचार्य अपनी सुविधा के अनुसार से पाठ्क्रम का प्रयोजनकार्य तय करेंगे)

- परीक्षण के अंको की प्रविष्टि के उपरान्त औसत, प्रतिशत और रैंको के आधार पर रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
- खास संप्रत्ययों को ध्यान में रखते हुए पाठ-योजना का निर्माण, जिसमें छात्रों के सक्रियात्मक स्तर की आशा की जाती हो।
- संगणक विज्ञान की आदर्श प्रयोगशाला की रचना की तैयारी।
- विद्यालय में संगणक विज्ञान प्रयोगशाला का सर्वेक्षण।
- चार्ट एवं मॉडल की तैयारी।

ज्ञान और पाठ्यक्रम

कोर्स न0 : 08

कोर्स क्रेडिट :04

सैद्धान्तिक : 80 अंक

प्रायोगिक : 20 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात् छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- ज्ञान एवं जानकारी के सम्प्रत्ययों को समझने में ।
- जानकारी प्राप्त करने के विभिन्न तरीको की समझ, ज्ञान का निर्माण, ज्ञान के सम्प्रेषण एवं निर्माण में ज्ञात एवं ज्ञाता के सापेक्षिक भूमिकाओं की समझ।
- ज्ञान के विभिन्न पहलुओं एवं उनके अर्न्तसम्बन्धों का विश्लेषण करना।
- विद्यालयीय शिक्षा में ज्ञान के विभिन्न रूप एवं उनके संगठन को पूरी तरह समझना।
- पाठ्यचर्चा का अर्थ एवं इससे जुड़े सम्प्रत्ययों की समझ।
- राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा के दस्तावेज में मुख्य अंश, संगठन, संभावना, विभिन्न परिप्रेक्ष्य, आवश्यकताएँ, प्राथमिकताएँ, पाठ्यक्रम सम्बन्धी विषय, बाल शिक्षण के तरीके में परिवर्तन, उसका क्रम, मूल्यांकन-प्रणाली एवं अन्य सुधारों का विश्लेषण करना।
- वर्तमान विद्यालयीय पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तक को रूप देने में ज्ञान संवर्गों, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और तकनीकी पहलुओं के प्रभाव की समझ।
- पाठ्यक्रम निर्माण के विभिन्न तरीके एवं प्रक्रिया की समझ।

विषय सूची-

इकाई-01 (ज्ञान और जानकारी)

- ज्ञान की संकल्पना।
- ज्ञान क्या है ?
- जानकारी क्या है? कर सकना, सोचना और जानकारी में अलग पहचान महसुस करना।
- सूचना, ज्ञान, कौशल, विश्वास और सच्चाई के बीच अन्तर।
- जानकारी प्रक्रिया।
- जानकारी का अलग तरीके क्या है?
- जानकारी का निर्माण कैसे होता है ? जानकारी के बनावट में क्या मौजूद है?
- जानकार से संबंधित भूमिका और ज्ञान आदान-प्रदान में जानना और बनावट क्या है?
- जानकारी के पक्षें

★ संबंधी और जानकारी के भिन्न-भिन्न पक्षें क्या हैं? जैसा कि स्थानीय और सार्वभौमिक, ठोस और संक्षेपित, सैद्धान्तिक और प्रायोगिक, प्रकरण संबंध और मूल पाठ-विषयक, विद्यालय और विद्यालय के बाहर (विद्यालय ज्ञान के खास दृष्टिकोण के समझ पर बल)

★ जानकारी में संस्कृति की भूमिका क्या है?

★ ज्ञान क्रियाविधि में कैसे प्रस्तुत किया गया है? ज्ञान पर कैसे इसका प्रभाव पड़ता है ?

इकाई-02 (ज्ञान के रूप में विद्यालयों में इसके संगठन)

★ क्या हमलोग ज्ञान को वर्गीकृत कर सकते हैं, किस आधार पर?

★ विद्यालयी शिक्षा में ज्ञान के किस रूप को जोड़ा जाता है?

★ कौन चुनता है? वैध करता है, और विद्यालय में संगठित ज्ञान के वर्गीकरण का रूप।

★ पाठ्यक्रम के रूप में, पाठयचर्या, पाठ्य-पुस्तक विद्यालय ज्ञान कैसे परिवर्तित किया जाता है?

इकाई-03 (पाठ्यक्रम की संकल्पना)

★ पाठ्यक्रम के प्रकृति और अर्थ को समझना। विद्यालय में पाठ्यक्रम की आवश्यकता।

★ ढांचागत प्रकृति पाठ्यक्रम: पाठ्यक्रम और विषय के बीच अन्तर और उनके विद्यालयी शिक्षा में महत्व।

★ पाठ्यपुस्तक के विचार।

★ विषयवस्तु के पहलू, सबसे महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम, भारतीय संदर्भ में महत्व

★ अंतर्विष्ट पाठ्यक्रम का अर्थ एवं संबंध।

★ विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम की दृष्टि : राष्ट्रीय-स्तर, राज्य-स्तर, विद्यालय-स्तर, कक्षा-स्तर और संबंधित मुद्दे (संयोग, संबंध, अंतर)

★ पाठ्यक्रम ढांचा के बीच अन्तर, पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या।

★ राष्ट्रीय और राज्य-स्तर पर विद्यालयी शिक्षा में पाठ्यक्रम की परंपरा (राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढाँचा के सम्बन्ध में)

इकाई-04 (दृढ़ता पाठ्यक्रम और सोच विचार)

★ अधिगमकर्त्ता का स्वभाव पर और ज्ञान के रूप, सीखने वाले के स्वभाव, आवश्यकता और रूचि, और सीखने की प्रक्रिया, ज्ञान के प्रकार और अनुशासन, और उनके विद्यालय विषय के भिन्न-भिन्न आचरणात्मक।

★ राष्ट्रीय या राज्य आधार पर पाठ्यक्रम का स्तर पर (i) सामाजिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक- भौगोलिक-अर्थशास्त्रिक विविधता (ii) समाज राजनीतिक प्रेरणा, सैद्धान्तिक और शैक्षणिक वास्तविकता के साथ (iii) आर्थिक अनिवार्यता (iv) तकनीकी संभावनाएं (v) सांस्कृतिक दिशा निर्धारण (vi) राष्ट्रीय प्राथमिकता (vii) सरकार की सिद्धान्त और संबंध क्षमता और (viii) अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ।

★ शैक्षणिक मानक में असमानता, साधारण लक्ष्य और मानदण्ड की आवश्यकताएँ/साधारण विद्यालय के पाठ्यक्रम से संबंधित राष्ट्रीय लक्ष्य और उनकी प्राथमिकताएँ।

★ विद्यालय के स्तर का विकास और उनके पाठ्यक्रम में विचार।-(i) ज्ञान के प्रकार और विद्यालय के विभिन्न विषयों का अभिलाक्षणिकरण (ii) शैक्षिक वस्तुगत के चिन्तित स्तर पर खासियत और संबद्धता (iii) विद्यार्थी के समाज, सांस्कृतिक सम्बन्ध बहुसांस्कृति, बहुभाषीय रूप (iv) सीखने वाले की गुणवत्ता (v) शिक्षकों के अनुभव और चिन्तन (vi) खास मुद्दा, पर्यावरणीय चिन्तन, लिंग विभिन्नाएँ, समावेशिता चिन्तन के मूल्य को मिलाकर और इसके मुद्दे, सामाजिक अति संवेदनशीलता।

इकाई-05 (पाठ्यक्रम विकास)

★ पाठ्यक्रम के विकास में विभिन्न उपागमों की समझ। -विषय केन्द्रित, पर्यावरणीय (स्थानीय चिन्तन का समावेश) व्यावहारिकता, क्षमता आधारित (सीखने के निम्न के स्तर को मिलाकर), रचनात्मक और सीखने की केन्द्रता।

★ पाठ्यक्रम बनाने की पद्धति। (i) प्रतिपादित लक्ष्य और उद्देश्य (सभी पाठ्यक्रम विषयवस्तु के लक्ष्य पर आधारित। (ii) चुनिंदा ज्ञान के लिए कसौटी और भिन्न-भिन्न विषयों के विषयक प्रश्नों कु ज्ञान प्रस्तुतीकरण (iii) मूलभूत विचारों के संगठन और विषयों के विस्तृत स्तर और विषयों का एकीकरण का (संपूर्ण) विषयों (iv) चुनाव और संगठन को सीखने की स्थिति (v) सीखने के अनुभव का चुनाव (vi) स्रोतों का चयन (vii) मूल्यांकन योजना।

★ भिन्न-भिन्न विषयों के क्षेत्रों में पाठ्यक्रम, समय-प्रबंधन, पाठ्यक्रम के कार्य सम्पादन के लिए पाठ्यपुस्तक एक औजार की तरह, दूसरा सीखने का स्रोत जैसा कि, सीखने पर और आई.सी.टी. एक दूसरे को प्रभावित करने वाला चलचित्र, दूसरा शिल्प वैज्ञानिक स्रोत।

★ पाठ्यक्रम सामग्री का उपयोग और योजना, पाठ्यक्रम सामग्रियों, वर्क बुक, हस्तालिखित और अन्य सामग्रियाँ।

अभ्यासार्थ कार्य (कोई एक) :-

- दर्शनशास्त्र के संदर्भ में, ज्ञान के सम्प्रत्यय का निर्धारण।
- पाठ्यक्रम सम्प्रत्यय में, समूह कार्य का मनोविश्लेषण करना।
- राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के ढ़ाँचे में, विद्यालय शिक्षा, प्रस्तुतीकरण तथा परिचर्चा के लिये एक लिखित प्रतिवेदन की समीक्षा ।
- विद्यालयीय पाठ्यक्रमों में सुधार के लिए आवश्यक कारकों का अध्ययन, विद्यालय देखने एवं उनसे परावर्तित अनुभवों को लिखें।
- शिक्षकों के पाठ्यपुस्तकों, कार्यपुस्तिका, पुस्तकों के स्त्रोतों के अनुसार, पावर प्वाईट प्रस्तुतीकरण और प्रतिवेदन शामिल करें।
- अभ्यासकर्ता को कक्षा के विद्यार्थियों के साथ साक्षात्कार और हिस्सेदारी एवं उनकी अनुभूति को जानना पाठ्यक्रम के संदर्भ में तथा उपयोगिता।
- पाठ्यक्रम समीक्षा को अनिवार्य रूप से पढ़ना और पाठ्यक्रम प्रारूप के अनुच्छेद को व्यवहार में महत्व और उनके परावर्तन।

अधिगम का आकलन

कोर्स न0 : 09 — **सैद्धान्तिक : 80 अंक**

कोर्स क्रेडिट :04 — **प्रायोगिक : 20 अंक**

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आंकलन और मूल्यांकन की प्रकृति और अपनी भूमिका को समझना।
- सतत और व्यापक तरीके से आँकलन के महत्व को समझना।
- मूल्यांकन कार्य और उपकरण शिक्षार्थियों के क्षमता और प्रदर्शन का आँकलन है ।
- निर्माण और उपलब्धि परीक्षण के कौशल को प्राप्त करना।
- मनोवैज्ञानिक परीक्षण के विभिन्न प्रकारों का व्यवस्था करना।
- स्कोरिंग और वर्गीकृत प्रक्रियाओं के अंकन पर विचार करना।
- छात्र के प्रदर्शन के तरीकों पर रिपोर्टिंग करना।
- प्रबन्धन का विश्लेषण और आँकलन के जानकारी की व्याख्या करना।
- प्रत्यालोचन और प्रदर्शन में सुधार करने की आदत को विकसित करना दर्शाती है।

इकाई-01 (आकलन एवं मूल्यांकन का परिचय)

★ परीक्षा की संकल्पना, मापन, परीक्षा, प्रशंसा, मूल्यांकन और उनके अन्त:संबंध।

★ उद्देश्य और मूल्यांकन के विषयवस्तु – स्थापन के लिए, प्रतिपुष्टि प्रदान करने के लिए, पदोन्नति क्रम, प्रमाणन, अधिगम कठिनाई का निदान।

★ ऑकलन के प्रकार–

1. उद्देश्य के आधार पर : रचनात्मक, संकलनात्मक, शकुन, नैदानिक मानक संदर्भ, मापदण्ड संदर्भ
2. प्रकृति और क्षेत्र के आधार पर – शिक्षक कृत, मानकीकृत
3. अनुक्रिया के आधार पर – मौखिक लिखित, प्रदर्शन
4. संदर्भ के आधार पर – बाह्य, स्वयं एवं शिक्षक
5. प्रकृति के आधार पर सूचनाओं को जमा करना – मात्रात्मक, गुणात्मक

★ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए ऑकलन एवं मूल्यांकन का महत्व, शैक्षणिक यंत्रों के रूप में निर्णय लेकर लिखित निर्देशात्मक वैकल्पिक व्यवस्था करना, विषयवस्तु का चुनाव, शिक्षण अधिगम स्रोत, शिक्षणशास्त्र, रणनीतियाँ और ऑकलन के प्रक्रिया का अनुशरण करना।

★ प्रमाणिक ऑकलन, विद्यालय आधारित आकलन।

इकाई-02 (अधिगम का आकलन)

★ संज्ञानात्मक की अवधारणा प्रभावत्मक एवं अधिगम की क्षत्रीय गतिशीलता एवं भावात्मक क्षेत्र की संकल्पना।

★ संशोधित वर्गीकरण का उद्देश्य (2001) एवं आकलन।

★ रचनात्मक सरणी की विशेषता और प्रश्न के विभिन्न रूप (VSA, SA, ET और वस्तुनिष्ट प्रकार तथा माहौल आधारित)

★ संरचना परीक्षण की बनावट - चरण, बनाने की विधि और इसके उपयोग

इकाई-03 (अधिगम का मूल्यांकन)

★ CCE के लिए आवश्यकताएँ एवं इसके महत्व और शिक्षकों द्वारा समस्याओं का सामना।

★ प्रदर्शित यंत्रों का अर्थ और निर्माण की प्रक्रिया, अवलोकन सारिणी, जाँच सूची, निर्धारण मापनी।

★ समूह प्रक्रिया के मूल्यांकन - समूह गतिशीलता के प्रकार समाजिक मापीय पद्धति, समूह के गठन के लिए चरण मूल्यांकन कार्य के लिए कसौटी सहयोगपूर्ण या सीखने की सहयोगी स्थिति में समाजिक मूल्यांकन के लिए कसौटी।

★ उपकरण गुणवत्ता में विश्वास - विश्वसनीयता, वैद्यता तथा क्रियाविधि, विश्लेषण।

★ पत्राधान मूल्यांकन का अर्थ कार्यक्षेत्र एवं उपयोग विकास एवं मूल्यांकन कार्यक्रम शिर्षकों के विकास।

इकाई-04 (व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन)

★ बुद्धि मापन-व्यक्तिगत अथवा समूह, शाब्दिक-अशाब्दिक शक्ति-चाल।

★ क्षमता मापन-क्षमता के जाँच एवं उसका उपयोग।

★ रोचकता के मापन - रोचक अविष्कारक के प्रयोग।

★ व्यवहार का मापन - व्यवहार पैमाने का उपयोग।

★ व्यक्तिगत मापन।

इकाई-05 (व्याख्या और विद्यार्थियों के अभिनय को सूचना)

★ विद्यार्थियों के प्रदर्शन की व्याख्या।

1. साँख्यिक व्याख्या (केन्द्रिय प्रवृति की मापन और चर के मापन, प्रतिशतता)
2. ग्राफीय प्रस्तुतीकरण (आयत चित्र, आवृति)
3. NPC - प्रतिशतता

★ श्रेणीकरण का अर्थ प्रकार और इसके उपयोग।

★ साझेदारी की भूमिका की प्रतिपुष्टि (छात्र माता-पिता, शिक्षक) और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सुधार, अधिगमकर्ता की शक्तियों एवं कमजोरी की पहचान।

★ विद्यार्थियों के प्रदर्शन की सूचना-विकास का विवरण, संचयी सूची, रूपरेखा और उसके प्रयोग पत्राधान।

वयावहारिक कार्य (कोई एक) :

■ एक विशिष्ट बिन्दु के विशिष्टीकरण के लिए एक सारिणी का निर्माण।

■ इकाई जाँच की संरचना सारिणी के लिए विशिष्टकरण तथा लक्ष्य समूह का प्रशासन तथा परिणाम की व्याख्या।

■ मनोवैज्ञानिक जाँच की प्रशासनिक तथा जाँच परिणाम का प्रयोजन ।

■ सत्यता या वैद्यता की निश्चितता प्रशासन स्वयं निर्मित परीक्षण।

■ एक परीक्षण बैट्री के साथ कम से कम पाँच परीक्षण सामग्रियेंका निर्माण विद्यार्थियों के समूह/एक समान कक्षा में प्राप्त करना।

■ प्रश्न पेपर का विश्लेषण (शिक्षक निर्मित)

एक समावेशी विद्यालय का निर्माण

कोर्स न0 : 09 सैद्धान्तिक : 40 अंक

कोर्स क्रेडिट :02 प्रायोगिक : 10 अंक

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

इस पाद्यक्रम विवरण को पूर्ण करने के पश्चात छात्राध्यापक सक्षम हो सकेंगे :

- समावेशी शिक्षा के अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व को समझने में ।
- कक्षा-कक्ष में बच्चों की विविध आवश्यकताओं को पहचानने में ।
- एक समावेशी विद्यालय की अवधारणा को समझने में।
- उचित रणनीति अपनाकर समावेशी कक्षा में छात्रों को व्यवस्थित करना।
- जाँच एवं मूल्यांकन की उपयुक्त रणनीति बनाकर और उससे सम्बन्धित रूपान्तर कर परिणाम मैं एकरूपता लाना।

विषय सूची-

इकाई-01 (समावेशी शिक्षा के परिचय)

- ★ समावेशी शिक्षा की संकल्पना, अर्थ, कार्य और चुनौतियाँ।
- ★ विशेष शिक्षा, संयुक्त शिक्षा और समावेशी शिक्षा के गुण और दोष के बीच भेद।
- ★ समावेशी वातावरण की बनावट! -शारीरिक, सामाजिक और भावनात्मक (वाधा मुक्त वातावरण)
- ★ विद्यार्थी के लिए समान शिक्षा के अवसर सुनिश्चित करने में अभिभावक, प्रधानाचार्य और शिक्षकों की भूमिका।
- ★ भारतीय संदर्भ में समावेशी शिक्षा के तथ्यों और मिथक के प्रसंग।
- ★ समावेशी शिक्षा के प्रभावशाली कारक।

इकाई-02 (विविध आवश्यकताओं वाले छात्रों का स्वरूप और जरूरतें)

- ★ विविध आवश्यकताओं वाले छात्रों का परिभाषा, प्रकार और वर्गीकरण (दृष्टिवाधित, श्रवणवाधित, विस्तृत अधिगम में कठिनाई, गामक और विक्षिप्त मांशपेशी विकार, दिमागी पक्षाघात, मंदबुद्धि, स्वलीनता, कुष्ठ रोगी, मानसिक रोग और बहु दिव्यांगता, विशेष स्वास्थ्य समस्या, प्रतिभाशाली, सृजनात्मक, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, छात्राओं, ग्रामीण छात्रों, अल्पसंख्यक बहुभाषाई छात्र, गली के बच्चे, प्रवासी श्रमिकों के बच्चे और अनाथ)

- अनुसंधान के साक्ष्य के आधार पर विविध आवश्यकताओं वाले छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताएँ एवं विशेषताएँ ।
- एक समावेशी विद्यालय की अवधारणा- आधारभूत संरचना और उपलब्धता, मानव संसाधन, विकलांगता से व्यवहार, पूर्ण विद्यालय दृष्टिकोर्ण, समुदाय आधारित शिक्षा।
- समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में विविध आवश्यकताओं वाले बच्चों (छात्रों) के लिए सहायक संसाधन और सेवाएँ।

इकाई-03 (विविध आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए शैक्षिक योजनाएँ, प्रबन्धन और मूल्यांकन तकनीक)

- अनुकूलन के लिए महत्व और आवश्यकता (विविध आवश्यकताओं के तहत आने वाले छात्रों की विभिन्न श्रेणियों के लिए माध्यमिक स्तर पर विभिन्न विषयों को सीखाने के लिए कार्यप्रणाली और सहमति)
- माध्यमिक स्तर के अनुकूल विज्ञान, सामालिक अध्ययन, गणित और भाषा पढ़ाने के लिए दिशानिर्देश।
- समावेशी शिक्षा के प्रभावशाली कार्यान्वयन के लिए शैक्षिक कार्यवाही।
- समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में सुधारों और मूल्यांकन को लागू करने में शिक्षकों की भूमिका- अनुकूलन के प्रकार, विविध आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए उपयोग किया गया रणनीति में समायोजन, आकलन और मूल्यांकन, सतत और व्यापक मूल्यांकन का महत्व।
- नियुक्ति, ग्रेडिंग, पदोन्नति और प्रमाणपत्र के लिए प्रयुक्त कार्यक्रमों और प्रक्रियाओं के मूल्यांकन मे एकरूपता लाना।

व्यवहारिक कार्य (कोई एक) :-

- विकलांग व्यक्ति अधिनियम, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, माध्यमिक स्तर पर नि:शक्तजन समावेशी शिक्षा योजना, सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान पर अध्ययन कर समावेशी शिक्षा के लिए उनका तात्पर्य बताना।
- दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित, मन्दबुद्धि एवं गामक दिव्यांग छात्रों के व्यवहार के अवलोकन के लिए विशिष्ट विद्यालयों में जाना।
- अखिल भारतीय वाक एवं श्रवण संस्थान का भ्रमण करना और देखना कि विविध आवश्यकताओं वाले छात्रों के मूल्यांकन के लिए कैसा बर्ताव किया जाता है।
- विद्यालयों/अखिल भारतीय वाक एवं श्रवण संस्थान का भ्रमण करना और विचार-विमर्श कर प्रतिवेदन तैया करना।
- समावेशी कक्षा के लिए पाठ-योजना बनाना।